आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" फरवरी 2026

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 36
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –27 । अंक–2 । माघ–फाल्गुन – स.2082 । फरवरी 2026

"ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥"

महाशिवरात्रि की शुभकामनायें

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

परम पूज्यनीय माताजी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

स्व0 श्रीमती विदुषी चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री धर्म शंकर चतुर्वेदी निवासी-जयपुर/चन्द्रपुर

जन्म 15 अगस्त, 1944 निर्वाण - 15 जनवरी, 2025

मेरी हर जीत का जश्न मनाती थी, रात को नींद न आए तो थपथपा कर सुलाती थी।
मन इतना निश्चल कि आहत होते ही आंसू बह जाते थे, मुझे घर से विदा करने पर मन में कई विचार आते थे।
कभी अदरक की चाय पिलाकर अपना लाड़ दिखातीं, तो कभी भजन सुनाकर हर त्यौहार की जान बन जाती।
हर तरह से बस, छोटों पर अपना प्यार लुटाती थी, माना कि खत्म हो गया है,आपके साथ का सफर।
पर अब याद आती है आपकी हर पहर, जानते है कि दूर होकर भी पास होगी आप हर डगर।
पर फिर भी सूना सा हो गया है, अपना घर, पर फिर भी सूना सा हो गया है, अपना घर।

- लावण्या

श्रद्धानवत

बहन	-	कुमद मिश्रा
पुत्र-पुत्रवधु	-	गौरव चतुर्वेदी RAS, डा. रूपाली चतुर्वेदी
पुत्री दामाद	-	गुंजन - सुदीप मिश्रा
	-	गौरी - सुबोध चतुर्वेदी
	-	सीमा - सुचित चतुर्वेदी
	-	शिखा - अविनाश चतुर्वेदी
पौत्री	-	लावन्या, तनुष्का,
नाती- नातिन	-	जिगीषा, प्रियांशी, दर्षिता, आदित्य, उदित, सूर्यांश
नाति-नतबहु	-	जलज-आस्था, कुशाग्र - शिप्रा
नातिन दामाद	-	स्नेहा, प्रांकित
परनातिन	-	पविका

पता:- गौरव चतुर्वेदी, RAS "धर्मनिधि"
ए-962, सिद्वार्थ नगर एयरपोर्ट के पास, जयपुर-302017
मोबाईल नं-9414066766

(र.क्र. 3364)

स्मृतियों में सदा

स्व. श्रीमती सुधा चतुर्वेदी

अटेर मैनपुरी-चंडीगढ़-भोपाल

02.08.1948-07.01.2025

माँ के रूप में ममता, पत्नी के रूप में समर्पण,
और एक स्त्री के रूप में अदम्य शक्ति-आपकी स्मृति सदैव साथ है।
हर संस्कार में आपकी छाया, हर संघर्ष में आपकी प्रेरणा,
आप नहीं हैं, फिर भी आप हर पल हमारे साथ हैं।
सदैव स्मरणीय।

स्मरण करने वालेः

डॉ. ललित किशोरचतुर्वेदी - पति
डॉ. गौरव चतुर्वेदी - डॉ. मधुलिका - पुत्र एवं पुत्रवधू
डॉ. रचना चतुर्वेदी - डॉ. विनीतचतुर्वेदी - पुत्री एवं दामाद
आकृति एवं श्रेय - पौत्र/पौत्री (नाती-नातिन)
समस्त चतुर्वेदी परिवार

(र.क्र. 3366)

त्वत: सर्वं त्वं हि सर्वं स्मरोऽसि
त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽतिशान्तः ।
त्वं वै वृद्धस्त्वं युवा त्वं च बालः
स्तत्वं यत्किं नास्त्यस्त्वं नतोऽहम् ॥
महाशिवरात्रि की
हार्दिक शुभकामनाएँ।
Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.
रेखा गॅस
एजन्सी
दु.नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001
(0257) 2221095 | 2221195 | 2225195 | 2228495.
rekhagas20032003@rediffmail.com

(र.क्र. 3375)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	7
संपादकीय	8
कार्यकारिणी बैठक	9
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय....	11
तीन मज़ेदार कहानियाँ	13
सावधान - गर्भावस्था में दवाऐं संभाल कर लें..	14
सम्पादक के नाम पत्र	19
पपीता: एक प्राकृतिक वरदान	20
स्वास्थ्य बीमा -- संभल कर??	21
तितिक्षा मय जीवन कैसे जीयें??	22
जरा मुस्कराइए	23
अहम रिश्ता	24
कैलेण्डर कहानी	26
सार्वजनिक विनम्र अपील*	27
शाखा समाचार	28
समाज समाचार	30
बिछड़े स्वजन	32

अंक 2
फरवरी 2026, वर्ष - 27

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak2024.chandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण सहयोगी : विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी समिति 2024–2027

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक:- डा० सतीश जी(नागपुर), श्री भरत जी (पूर्व सभापति) भोपाल,श्री आर.आर.जी (पूर्व सभापति) मुम्बई, श्री कमलेश जी पाण्डे(पूर्व सभापति) नोएडा, डॉ. प्रदीप जी (पूर्व सभापति) दिल्ली, ले. जन. विष्णुकांत जी(नोएडा), श्री विकास जी (कानपुर), श्री संतोष जी चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र जी चौबे (गोंदिया), श्री महेश जी (दिल्ली)।

परामर्शदाता मण्डल:- श्री अविनाश जी (कानपुर), डॉ. ऋषभ जी (देहरादून), श्री उपेन्द्र जी पाण्डे (कोलकाता),श्री भरत कुमार जी (रिषड़ा),श्री शिव जी (कोटा), श्रीमती बीना जी मिश्रा (मैनपुरी/आगरा), डॉ. निखिल जी (आगरा), दिलीप जी, (फिरोजाबाद).

सभापति:- श्रीमती ऊषा जी भोपाल

उप-सभापति:- श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज जी (मुम्बई), श्रीमती आभा जी (नागपुर), डॉ. कुश जी (इटावा), श्री विनोद जी (गुरूग्राम), श्री सुमंत जी (आगरा), श्री अंशुमान जी (जयपुर)

सचिव:- श्री शशांक जी (भोपाल)

सह-सचिव:- श्री आशुतोष जी (कानपुर), श्री करूणेश जी (ग्वालियर), श्री गोविन्द जी (जयपुर), श्री अभयराज जी (गुरूग्राम), श्री मनीष जी (कोटा), श्रीमती बबीता जी (लखनऊ), श्री संजय जी (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष:- श्री ज्ञानेन्द्र जी (साहिबाबाद)

सम्पादक:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र जी(गाजियाबाद)

मा. कार्यकारिणी सदस्य गण:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), डा० राकेश जी (मथुरा),श्री मनीष जी (हरदोई), श्री लोकेन्द्र जी (गाजियाबाद), श्री भुवनेश कुमार जी चौबे (गोंदिया), श्री अजय जी चौबे (भोपाल), श्री राकेश कुमार जी 'चुनचुन' (बरेली), श्री विशाल जी (आगरा), श्री राहुल जी (मैनपुरी) श्री प्रदीप जी 'संजू' (गाजियाबाद), श्री राजीव जी (अहमदाबाद), श्री विवेक जी (मुम्बई),श्री विपिन जी (लखनऊ), श्री मनीष जी (दिल्ली), श्री ललित जी (लखनऊ), श्रीमती विनीता जी (देहरादून), श्री कृष्ण बल्लभ जी (बिलासपुर), श्री संजय जी मिश्रा (कानपुर), श्री अभिषेक जी (ग्वालियर), श्री आशीष जी 'रानू' (आगरा), श्री प्रवेश जी (कानपुर), श्री आशीष सुभाष जी (आगरा), श्री हर्षमोहन जी (आगरा), श्री आलोक जी (कोटा), श्री सतेन्द्र जी (नोयडा), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), श्री नवीन जी (जहांगीरपुर/लखनऊ), श्री सौरभ जी (लखनऊ), श्रीमती अंजू जी (मुम्बई), श्रीमती अर्चना जी (जयपुर), श्रीमती इंदु जी (नोयडा), श्री नवीन जी (चैन्नई), श्री हितेष जी (पुरा), श्री तनुज जी चौबे (नागपुर), श्री अरूण जी (जयपुर), श्री हर्ष कमल जी (बनारस), श्रीमती अलका जी (करनाल), श्री विमल जी (नोयडा), श्री मनोज जी (सागर), श्रीमती क्षमा जी (ग्वालियर), श्री प्रवेश जी (चांपा,छ0ग0), श्री कृष्णकांत जी (हैदराबाद), श्रीमती मीता जी (कानपुर), श्री अनुराग जी 'बब्बल' (आगरा), श्री मधुपम जी (मुम्बई), श्री धनेश जी (साहिबाबाद), डॉ. मीनाक्ष जी (भोपाल), श्री मुकेश गिरीश जी पाण्डे (कोलकाता), श्री गगन जी (पुरा), श्रीमती शिवांगी जी, भोपाल, श्रीमती अनुपमा जी, नोएडा

स्थाई आमंत्रित:- श्री मनोज जी (बैंगलोर) , श्री पदम जी (लखनऊ), श्री अशोक जी (फरीदाबाद), श्री गिरधारी जी (जयपुर), श्री कमलेश जी रावत (कोटा), श्री विपिन जी पाण्डे (गाजियाबाद), श्री राजेन्द्रनाथ जी (प्रयागराज), डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद), डॉ. कपिल जी (आगरा), श्री अनिल जी (भोपाल), श्री अरविंद जी (दिल्ली) , श्री दिनकर राव जी (फरौली), श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर), अतुल जी (फिरोजाबाद).

विशेष आमंत्रित:- श्री मधुकर जी पाठक (आगरा), श्री नीरज जी (चक्रधरपुर), श्री कौशल जी (दिल्ली), श्री अम्बर जी पाण्डे (भोपाल), श्री साकेत जी (मैनपुरी), श्री दीपक जी (लखनऊ), श्रीमती तृप्ति जी (पटना), श्री अंकुर जी (कटनी), श्री शैलेन्द्र जी (उचाड़), श्री अनुराग जी 'टिंचू' (कानपुर), श्रीमती शिखा जी पाठक (थाणे), श्रीमती अमिता जी (लखनऊ), श्री उमेश जी (बुलंदशहर), श्री ललित जी (जयपुर/नोयडा), श्री श्यामलाल जी (भिण्ड), श्री आलोक जी (जयपुर), श्री संजय जी (लखनऊ),श्रीमती मधु जी (देहरादून), श्री धर्मेन्द्र जी (कानपुर), श्री मनीष जी (इटावा), श्री पीयूष जी (पूना), श्री जितेंद्र जी (पूना), श्री मधुर जी (बैंगलोर), श्री यदुवेश जी (पुरा/लखनऊ), श्री नवीन जी (बैंगलोर), श्री दिलीप जी (हरिद्वार), श्री शैलेन्द्र जी (फिरोजाबाद), श्री प्रवीण जी (हैदराबाद), श्री नीलकमल जी (कलकत्ता), श्री मुकेश जी (तरसोखर/रिसड़ा), श्री शैलेन्द्र जी (फरीदाबाद), श्री नरेश जी (भोपाल), श्री विश्वास जी (भोपाल), श्रीमती वंदना जी (रिसड़ा), श्री प्रशांत जी (मथुरा), श्री नरेन्द्र कुमार जी चौबे (ग्वालियर), श्री भूषण जी (साहिबाबाद), श्री दुर्गेश जी (जयपुर), श्री अनुराग जी (गुरूग्राम), श्री विशाल जी (दानपुर) श्री प्रवीण जी 'छौना'(फरौली), श्री लोकेन्द्र (कानपुर), श्री नलिन जी, (नोएडा), श्री हरीश जी, (भोपाल), नमन जी, लखनऊ

मूल निवास प्रकोष्ठ:- श्री गगन जी (पुरा) संयोजक।

शाखा सभा प्रकोष्ठ:- 1) ले. जन. विष्णु कांत जी नोएडा, 2) श्री पंकज जी, मुंबई 3) श्री प्रदीप जी, लखनऊ 4) श्री अजय जी तिवारी, ग्वालियर 5)श्री सुनील जी, जयपुर 6) श्री विनय जी, कोटा 7) श्रीमती नीतिका जी, गुरुग्राम 9) श्री प्रदीप जी,गाजियाबाद 10) श्री सुशील जी, फरीदाबाद 12) श्री मुकेश जी,आगरा (रजि.) 13) श्री संजय जी, अहमदाबाद 14)श्री पंकज जी, हरदोई, 15) श्री भूपेन्द्र जी, जहांगीरपुर सभा 16) श्री गौरी शंकर जी,समाज,फरौली 17) श्री महेश जी, देहली सभा 18) श्री शैलेंद्र जी, मथुरा सभा 19) श्री ऋषभ जी, देहरादून 20) श्री राजेन्द्र जी, फर्रुखाबाद सभा, 21) श्री एम. बाबू, मैनपुरी सभा, 22) श्री समीर चतुर्वेदी, पटना सभा, 23) नागपुर सभा, 24) दिलीप चतुर्वेदी, हरिद्वार सभा 24) नृपेंद्र जी, फिरोजाबाद, 25) श्रीमती नीलम पाठक जी, भोपाल सभा

युवा प्रकोष्ठ:- (1) श्री मधुपम जी- मुम्बई (संयोजक) (2) श्री नमन जी (फिरोजाबाद), उपसंयोजक

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ:- (1) श्री विवेक जी-संयोजक (मम्बई)

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ : अरविंद चतुर्वेदी दिल्ली संयोजक, संजय चतुर्वेदी फरीदाबाद

चिकित्सा प्रकोष्ठ:- (3) डॉ. मीनाक्ष जी-संयोजक (भोपाल)

उद्यमिता प्रकोष्ठ:- अजय चौबे, भोपाल

महिला प्रकोष्ठ:- श्रीमती शिवांगी जी (संयोजक), श्रीमती अनुपमा जी (उप संयोजक)

महासभा कार्यालय: 405/406, चिरंजीव टावर नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110019

।। अपनों से अपनी बात।।

● ऊषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

आदरणीय बंधुवर /भगिनी,
सादर पालागन
किसी आँधी तूफान से हम नहीं डरते।
हवा की शर्त पर हम उड़ान नहीं भरते।।
सुनों ऐ आस्मां वालों खुद पे भरोसा हम है करते।
लगाके पंख औरों के उड़ान हम नहीं भरते।।
अज्ञात

महाशिवरात्रि की शुभकामनाएं एवं बधाई ।

आशा है आप सभी लोग परिवार सहित स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे, भगवान शिव भोलेनाथ हम सब पर कृपा और दया बनाए रखें। 11 जनवरी को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक मुंबई में आहूत की गई, बैठक में विभिन्न मुद्दों पर सार्थक चर्चा हुई। यह निश्चित है समाज में कुछ समस्याएं हैं जिनका प्रभाव सभी के ऊपर पड़ रहा हैं,लेकिन कोई भी समस्या ऐसी नहीं जिसका निदान नहीं हो सकता आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि हम स्वेच्छा से आत्मविश्वास के साथ निदान की ओर बढ़े। विवाह के बाद अलगाव को कानूनी मान्यता देने हेतु बडी मात्रा में रुपयो की मांग करना करना न्यायोचित नहीं, विवाह में दोनों पक्षों का व्यय होता है फिर एक ही पक्ष के ऊपर दबाव क्यों?

महासभा का प्रयास प्रारंभ से यही रहा है और रहेगा परिवारों में विघटन ना हो ,अलगाव ना हो

इस हेतु महासभा द्वारा कुछ वरिष्ठ लोगों की एक समिति का गठन भी किया गया है ।समाज के सभी बन्धुओं से आग्रह है अपने-अपने स्तर पर वह अलगाव तथा विच्छेद को रोकने का प्रयास कर उदाहरण प्रस्तुत करें। नियम तथा कानून है लेकिन मानने वाले तथा मनमाने वाले तो समाज के ही लोग हैं।

समाज के व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसके अंतिम संस्कार में घटती हुई उपस्थित चिंतनीय है कभी-कभी तो स्थिति ऐसी बनती है चार व्यक्तियो, की उपस्थिति नहीं होती , ऐसी स्थिति लज्जा जनक है इस संबंध में फिर से चर्चा हुई सभी से विनम्र आग्रह है उपस्थित होकर सामाजिक एकता का परिचय अवश्य दें।

दिन में विवाह संस्कार आयोजित करने के बारे में विचार अवश्य करें यह सर्वजन हिताय है। जो आयोजित कर रहे हैं, उन्हें बधाई।

चतुर्वेदी चन्दिका के वितरण में डाक विभाग के कारण बाधायें उत्पन्न हो रही है। आदरणीय शिवजी, कोटा ने बताया चतुर्वेदी न मिलने पर डाकघर गया। सक्षम अधिकारी के सक्षम समस्या रखी, वहीं पर बड़ा आश्चर्य हुआ कई महीनों की चतुर्वेदी चंद्रिका कोटा निवासियों की वहां पर पड़ी हुई थी। जिनका वितरण नहीं किया गया था। वह उन्हें वहां से ले आये और सभी बंधुओ को प्रदान की। कृपया चन्दिका न मिलने पर डाकखाने से संपर्क अवश्य करें। मुंबई शाखा सभा का में हार्दिक आभार तथा धन्यवाद प्रेषित करती हूं सुंदर,व्यवस्थित बैठक आयोजित कराने की व्यवस्थाने सभी को अभिभूत किया। विशेष सहायता निधि हेतु जिन बंधुओं ने सहयोग किया। उनका हार्दिक आभार धन्यवाद विशेष कर महासभा के संरक्षक आदरणीय राजेंद्र चतुर्वेदी जी जिन्होंने रु.1,00,000/- विशेष सहायता निधि के लिए प्रदान की। नवयुवक चि. पराग पंकज चतुर्वेदी, मुम्बई ने एक बच्ची की शिक्षा हेतु राशि प्रदान कर रहे है। सभी का आभार

महासभा की कार्यकारिणी के पूर्व सदस्य आदरणीय भरत चतुर्वेदी (होलीपुरा/इन्दौर) का निधन अपूर्णीय क्षति है। उनको एवं अन्य पवित्र आत्माओं को जो हमारे बीच से चले गए उनको श्रद्धा सहित श्रद्धांजलि अर्पित की। ईश्वर उनको अपने चरणों में स्थान दें तथा परिवार को धैर्य प्रदान करें।

सभी को सादर पालागन

दिलीप सिकंदरपुरिया

संपादकीय

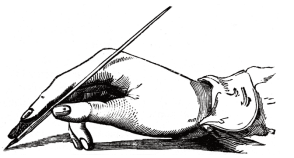

आदरणीय बंधुवर सादर पालागन एवं हार्दिक अभिनंदन।

प्रायः दूसरों की जिंदगी देखकर डर लगता है कि हम तो पीछे रह गए,दूसरो से तुलना करने से तनाव बढ़ता है, जबकि जो है जो है उसे स्वीकार करने से तनाव घटाता है।

आजकल हमारा जीवन सोशल मीडिया आधारित हो गया क्योंकि लगातार स्क्रीन पर दूसरो की जिंदगी देखते रहने पर तुलना एवं बेचैनी बढ़ती है । इसके लिए डिजिटल टाइम मैनेज करने के साथ ही आत्म चिंतन और विचार करें कि हर जगह शामिल होने की इच्छा क्यों होती है। प्रायः हीन भावना तथा असुरक्षा के कारण जीवन में हार का डर लगता है ।यह स्वीकार करना होगा कि सब कुछ करना न तो संभव है न ही जरुरी।हर जगह शामिल न होकर आप अपना समय, ऊर्जा और मानसिक शांति बचा सकते हैं,जो जीवन को स्वस्थ एवं प्रसन्न रखने के लिए आवश्यक है। हमारे पास जो है उसी पर ध्यान देना और उसकी कद्र करना सीखा तो उन चीजों पर दुःख नहीं होता जो हमारे पास नहीं है। इसके लिए छोटी छोटी खुशियों का आंनद लेते हुए समय बिताना सीखें।

इसीलिए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने वो लिखा, जिसमें जीवन में आशा और साहस की बात है-----

नर हो, न निराश करो मन को, कुछ काम करो, कुछ काम करो।

जग में रह कर के नाम करो, यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो।

समझो इसमें क्या सार है, कुछ भी नहीं बस प्यार है।

जीवन में जो भी मिले, उसे अपनाओ, हर पल को खुशी से बिताओ।

अपने मूल्यों पर आधारित जीवन में ना कहना भी सीखना चाहिए, यदि दूसरों को संतुष्ट करने के लिए अपने सिद्धांत से समझौता करते हैं तो आप आत्मग्लानि के भंवर में उलझे रहेंगे।

स्मार्ट फोन के बढ़ते इस्तेमाल से सूचना क्रांति तो आई है, मगर इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। अधूरी एवं गलत जानकारी से लोग भटक जाते हैं, जिससे लोग अपने लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकते हैं। फिर इंटरनेट की सलाह पर अमल करने से मुसीबत के दलदल में फंस जाते हैं, उसी में समाधान भी तलाश करते हैं, एक चिकित्सक ने बताया आज 20% मरीज गूगल की वजह से मामूली लक्षणों को भी किसी घातक बीमारी समझ कर मनोरोगी बन रहे हैं।

अपने समय का महत्व समझना बहुत जरूरी है, क्योंकि समय एक बार चला जाए तो वापस नहीं आता है। इसलिए इसे अपनी मनपसंद गतिविधियों में व्यतीत करते हुए लक्ष्य प्राप्त करने हेतु अनुशासित परिश्रम करें।

अपने लक्ष्य को प्राप्त का प्रयास करने पर खुद पर शक होना, अकेलापन महसूस करना या चिन्तित होना बिल्कुल सामान्य है।ये भावनाएं असंमजस में डाल देती हैं। इसलिए इस बदलाव के दौर में अपनी भावनाओं को संतुलित करने के उपाय अपनाएं, अनुभवी मेंटर्स से मार्गदर्शन ले,जो आपको मानसिक रूप से मजबूत एवं प्रेरित करें।

अतएव आपकी दूरदर्शिता और कड़ी मेहनत सफलता का रास्ता दिखा सकतीं हैं, लेकिन कभी कभी सभी सद्प्रयासो के बाबजूद विभिन्न कारणों से सफलता प्राप्त नहीं होती, तभी आपको मानसिक रूप से मजबूत रहना होगा, जिससे आप पुनः अपने लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास करें। जीवन में असफलता पर भी आनंद लेने वाले लोगों की बात ही अलग होती है ----

यत्नानां फलम् अपि अस्ति न चेत् तत्र खेदः न कार्या!

असर्वगता नदयो न खलु समुद्राः भवन्ति!!

अर्थात...अगर हम अपने प्रयासों में सफल नहीं होते, तो भी हमें निराश नहीं होना चाहिए। नदियाँ सभी जगह नहीं होती, लेकिन समुद्र तो हमेशा भरा रहता है। इसी तरह, हमारे प्रयास कभी न कभी फल जरूर देंगे।

जनवरी 26 अंक में उदिता जी का लेख आंतरिक महाभारत ' राकेश जी का खोले के हनुमान

जी राजीव रंजन जी की कविता मेरा भारत कहां खो गया पठनीय एवं विचारणीय है, जो अन्य बांधव को भी लिखने को प्रेरित कर सकते हैं। पुनः सभी से लेख, सुझाव एवं विज्ञापन आमंत्रित हैं।

महाशिवरात्रि, रंगभरी एकादशी एवं होली पर हार्दिक शुभकामनाएं !!

कार्यकारिणी बैठक
मुंबई, 11 जनवरी 2026

स्वागत सत्र

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक रविवार 11 जनवरी 2026 को देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में आहूत की गयी। बैठक की अध्यक्षता महासभा की सभापति श्रीमती उषा जी ने की। 10 जनवरी से ही मुंबई पहुंचने पर कार्यकारिणी सदस्यों का स्वागत होटल इंटरनेशनल, विले पार्ले में श्री अंबुज जी ससम्मान आवभगत कर रहे थे। जहां सुबह के स्वल्पाहार में विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन थे,जिनकी सभी प्रशंसा कर रहे थे। स्वल्पाहार के बाद सभी बैठकर विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करने में व्यस्त हो गए।

होटल में ही दोपहर के भोजन के दौरान ही श्रीमती निमिषा, मुंबई ने जानकारी दी कि हम सब शाम 4 बजे यहां से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विनोद चतुर्वेदी के निवास के लिए प्रस्थान करेंगे, जहां उन्होंने हाई टी एवं रात्रि भोजन के अलावा जूहु चौपाटी और इस्कॉन मंदिर भ्रमण का कार्यक्रम बनाया है। मुंबई दर्शन की ललक सभी के मन में थी।शाम को सभी एक साथ विनोद जी के निवास पर पहुंचे, जहां श्री विनोद जी, श्री विनय जी एवं श्री महेन्द्र जी सपरिवार उपस्थित होकर स्वागत कर रहे थे। अल्पाहार लेने के बाद सभी जूहु चौपाटी एवं इस्कॉन मंदिर भ्रमण के बाद भोजन करने के बाद होटल इंटरनेशनल वापस लौटे। आनंदित भ्रमण के दौरान कु. आश्री सुपुत्री विनोद जी ने हम सब का मार्गदर्शन किया।

कार्यकारिणी बैठक : रविवार 11 जनवरी 26 को स्वादिष्ट स्वल्पाहार के पश्चात महासभा कार्यकारिणी बैठक अपने तय समयनुसार सुबह 10 बजे प्रारंभ हुई। मुंबई शाखा सभा के महामंत्री श्री मधुपम जी ने महासभा की अध्यक्ष श्रीमती उषा चतुर्वेदी, संरक्षक श्री भरत जी, श्री राजेन्द्र जी, डॉ. प्रदीप जी तथा उपाध्यक्ष सर्वश्री मुनीन्द्र जी, विनोद जी, पंकज जी एवं कोषाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी को मंचासीन कराया। फिर दीप प्रज्वलन के साथ ही श्रीमती दीप्ति चतुर्वेदी के मंगलाचरण से बैठक की औपचारिक शुरुआत हुई। उसके बाद मुंबई अध्यक्ष पंकज जी की टीम ने सभी अतिथियों का स्वागत पुष्पमाला के साथ शाल ओढ़ाकर किया। श्री मधुपम जी ने मुंबई सभा के विषय में विस्तृत जानकारी दी। फिर शाखा सभा के अध्यक्ष पंकज जी ने अपने संबोधन में सभी आगंतुको का स्वागत करते हुए धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया, आपने डॉ. कलाम को याद करते हुए कहा -- मैं महानता के साथ पैदा हुआ हूं, मैं आत्मविश्वास के साथ पैदा हुआ हूं, मैं पंखों के साथ पैदा हुआ हूं, इसलिए रेंगने के लिए नहीं बना हूं, मेरे पास पंख है मैं उड़ूंगा, मैं उड़ता रहूंगा।

इसके बाद मंत्री की अनुपस्थिति के कारण बैठक का संचालन कोषाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी ने संभाला। कोरम के अभाव के कारण संविधान के अनुसार बैठक कुछ समय स्थगित करने के बाद पुनः प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम पिछली फिरोजाबाद बैठक की कार्रवाई का वाचन हुआ,जिसकी सभा ने सर्वसम्मति से पुष्टि कर दी। कार्य सूची में द्वितीय स्थान पर अंकित महासभा सदस्यता अभियान पर विस्तृत चर्चा हुई, सभापति ने बताया कि पूर्व में बनाए गए सदस्यों के सदस्यता फार्म जमा नहीं हुए हैं, उनसे शीघ्रता शीघ्र प्राप्त करने की अपील की ताकि उनकी सदस्यता की पुष्टि हो सकें। विशेषकर मुंबई अध्यक्ष पंकज जी से इस संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर शेष फार्म को शीघ्र जमा करने के निर्देश दिए। पंकज जी ने 28 फरवरी तक फार्म तक जमा करने का आश्वासन दिया।

संरक्षक डॉ. प्रदीप द्वारा डिजीटल साइन से आंनलाइन फार्म स्वीकार करने का सुझाव दिया,जिसे सर्वसम्मति से पारित कर दिया, वर्तमान में महासभा के 3371 सदस्य हैं, जिसमें मात्र 50% फार्म आए हैं। अध्यक्षा जी ने सदन को जानकारी दी कि लखनऊ एवं भोपाल शाखा सभा के नये चुनाव सम्पन्न हो गए हैं, लखनऊ में श्री प्रदीप जी, राजेन्द्रनाथ जी प्रयागराज तथा भोपाल में श्रीमती नीलम पाठक निर्विरोध अध्यक्ष चुनी गई हैं। सदन ने तालियां बजाकर सभी को बधाई दी, सभी शाखा सभाओं की महासभा से संबद्ध होने की भी पुष्टि करायी गई। सभापति ने पूर्व में बनाई गई समिति से महासभा सदस्यता अभियान उत्साह एवं उमंग से निरंतर जारी रखने का आवाहन किया। इसके पश्चात कोषाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र जी ने द्वारा अन्नपूर्णा योजना एवं विशेष सहायता निधि के विषय में सम्पूर्ण जानकारी सभा के समक्ष प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि अन्नपूर्णा योजना निर्विघ्न चल रही है, इस हेतु समाज के उन दानी लोगों का आभार व्यक्त किया जो निस्वार्थ भाव से सहायता दे रहे हैं। अन्न पूर्णा में 47 लाभार्थियों को रु. 276000/ की तिमाही राशि और शिक्षा सहायता मे रु 29000/ त्रैमासिक प्रदान किए जाते हैं। विशेष सहायता निधि से लाभार्थी को मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए राशि दी गई। अध्यक्षा ऊषा जी ने चतुर्वेदी चंद्रिका के विषय में बताया कि अभी तक जो सदस्य रु 400/- वार्षिक देकर रजिस्ट्री से पत्रिका मंगवाते थे, लेकिन डाक विभाग ने रजिस्ट्री सेवा बंद कर दी गयी है, अतएव यह सेवा उपलब्ध नहीं हो सकती है। दूसरी ओर स्पीड पोस्ट

से एक पत्रिका के लिए लगभग रु 100/- मासिक खर्च आता है अर्थात रु 1200/- वार्षिक प्राप्त करने पर ही पत्रिका स्पीड पोस्ट से भेज सकते हैं, अन्यथा सभी पत्रिकाओं को साधारण डाक द्वारा भेजा ही जा रहा है।

फिर सभापति ऊषा जी ने दिन में शादी करने का सुझाव प्रस्तुत किया,जिस पर चर्चा में श्रीमती इंदु जी, श्रीमती शिखा पाठक जी, श्रीमती अंजू जी, श्रीमती विनीता जी, राजेश जी ने इसका समर्थन किया। डॉ. प्रदीप जी ने स्पष्ट किया कि गुरुओं ने भी बताया कि दिन में भी शादी का मुहूर्त निकाला जा सकता है, इससे खर्चे में भी कमी होगी। गोंदिया से पधारे भुवनेश जी ने बताया कि वह अपनी बेटी की शादी दिन में ही कर रहे हैं। सभी ने तालियां बजाकर उन्हें बधाई देते हुए प्रस्ताव का समर्थन किया, लेकिन नलिन जी का विचार था कि शादी दिन में हो या रात्रि में विषय को ऐच्छिक ही रहने दिया जाय। सभापति उषा जी ने महासभा की आर्थिक स्थिति को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए सभी से सहयोग एवं समर्थन करने का आह्वान किया ताकि समाज में और अधिक खर्च किया जाए। एजेंडा पर चर्चा होने के बाद खुले सत्र में कुछ लोगों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। श्रीमती इंदु जी ने संबंध विच्छेद होने पर वधू पक्ष द्वारा असीमित राशि मांगे जाने के संबंध में महासभा को विचार कर कार्रवाई करना चाहिए। श्री शिव जी ने बताया कि उन्होंने कोटा में पोस्ट आफिस में गड़बड़ी की जानकारी देते हुए कहा कि पोस्ट आफिस से कई महीनों की पत्रिका एकत्र कर सभी के घर पर पहुंचाईं, उन्होंने कहा भविष्य में भी सक्रिय भूमिका निभायेंगे। तत्पश्चात पुरूषोत्तम जी, डॉ. महेंद्र जी,दीप्ति जी सुश्री आश्री जी ने अपने विचार सदन के समक्ष रखे।

श्री पुरूषोत्तम जी ने अंग्रेजी की बढ़ती लोकप्रियता की चर्चा करते हुए चंद्रिका के अंग्रेजी संस्करण के प्रकाशन का सुझाव दिया। डॉ. महेन्द्र जी ने चतुर्वेदी बिजनेस नेटवर्क पर विचार रखे। श्रीमती दीप्ति जी ने फेसबुक एवं इंस्टाग्राम के इस्तेमाल का सुझाव दिया। कु. आश्री ने एस.एम.ई एवं स्टार्ट अप संस्कृति पर जोर दिया। इसके बाद ज्ञानेन्द्र जी ने संरक्षकों से अपने अपने विचार व्यक्त करने हेतु आमंत्रित किया। संरक्षक डॉ. प्रदीप जी ने कहा कि किसी भी सामाजिक संगठन की मजबूती उसके सदस्यों में आपसी भावनात्मक लगाव पर निर्भर करती है, उन्होंने महासभा में आर्थिक संग्रह के लिए उनकी गोमाता गुल्लक योजना को पुनः सक्रिय करने का सुझाव दिया। आपने बताया कि उद्योग संबंधी कार्यशाला के साथ ही संस्कार देने हेतु गुरुओं की आनलाइन कार्यशाला आयोजित हो चुकी है। फिर संरक्षक श्री भरत जी ने मुंबई सभा में युवा पदाधिकारी नियुक्त करने पर शुभकामनाएं देते हुए सभी सभाओं से युवाओं को आगे बढ़ाने का विचार दिया। उन्होंने कहा कि कुछ बांधव कहते हैं कि महासभा प्रस्ताव तो पारित करती है, लेकिन अमल नहीं होता। मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि महासभा के प्रस्तावों ने समाज में संस्कृति, रीति रिवाज एवं संस्कार बचाने में सहयोग किया है। समाज में महासभा द्वारा संचालित कार्य उसके पारित प्रस्ताव पर अमल करने का ही परिणाम है। महासभा के प्रस्तावों पर चर्चा करने से समाज की मानसिकता में धीरे-धीरे बदलाव आया है। युवाओं को जोड़ने के लिए फिरोजाबाद क्रिकेट टूर्नामेंट शुरू किया गया,जो कोरोना से बाधित हो गया,अब जयपुर में टूर्नामेंट शुरू किया गया है। धीरे-धीरे युवा पीढ़ी समाज में सक्रिय हो रही है। इसके बाद संरक्षक श्री राजेन्द्र जी ने पत्रिका के सम्पूर्ण/डिजिटल करण का सुझाव दिया। उन्होंने ग्रामीण स्तर पर सहकारिता आधार पर लघु उद्योग से जरूरतमंद लोगों की सहायता का सुझाव दिया, जहां महासभा एवं शाखा सभाओं से मार्केटिंग में सहायक होंगी। आपने यह भी विचार रखा कोई भी संगठन समाज के आर्थिक सहयोग के बिना नहीं चल सकता यह आवश्यक है।

संरक्षकों के विचार मंथन के उपरांत समाज में सेवारत मुंबई समाज की विभूतियों को सम्मानित किया गया। जिसमें सर्वश्री राजेन्द्र जी (आर आर), पुरुषोत्तम जी, अंबुज जी,विवेक जी, राजेश जी, योगेश जी, सुशील पाठक जी को सम्मानित किया गया। श्री ईश्वर जी अपरिहार्य कारणों से उपस्थित न हो सकें,उनका सम्मान शाखा सभा को दिया गया। बैठक के अंत में सभापति उषा जी ने मुंबई सभा को सफल एवं सुव्यवस्थित बैठक आयोजित करने के लिए बधाई देते हुए आभार व्यक्त किया। सुंदर आवास व्यवस्था करने हेतु अंबुज जी को धन्यवाद देते हुए उन्हें जन्म दिन पर शुभकामनाएं देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना प्रकट की। उन्होंने बताया कि समाज के सहयोग से अन्नपूर्णा योजना निर्विघ्न रूप से चल रही है, आपने सभी बांधवों से आग्रह किया कि यदि किसी की जानकारी में कोई जरूरतमंद हो तो महासभा को सूचित अवश्य करें।

उन्होंने महिला प्रकोष्ठ के विभिन्न सामाजिक आयोजनों की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनसे समाज के संस्कार एवं परम्परा को शक्ति मिलती है। उन्होंने समाज में अंतिम संस्कार में शामिल होने की प्रवृत्ति पर चिंता जताई तथा सभी को इस बारे में प्रयास करने होंगे। सभापति ने विश्वास जताया कि अर्थ एवं उद्योग नगरी मुंबई से निश्चित ही आर्थिक सहयोग प्राप्त होगा। उनकी अपील पर आर आर जी,संरक्षक ने एक लाख रुपए, विनय जी (अहमदाबाद) ने पांच हजार रुपए, श्रीमती इंदु जी (नोएडा) ने इकतीस सौ रुपए, संजय जी (अहमदाबाद) ने ग्यारह हज़ार रुपए प्रदान किए। सभापति ने कहा कि जिन बांधवों एवं भगिनियों ने महासभा बैठक आयोजित करने में सहयोग किया,उनका हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करती हूं। कार्यक्रम के अंत में भरत जी (होलीपुरा/इंदौर) एवं अन्य पवित्र आत्माएं इस नश्वर संसार से विदा हो गए हैं,उन सबकी सद्गति एवं शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि देकर बैठक समाप्त की गई।

- **शशांक चतुर्वेदी,** सचिव
- **डॉ. मनीष चतुर्वेदी,** सहसचिव

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई) पीएमईजीपी अनुभाग

- डॉ. अजय चैबे

मौजूदा सफल पीएमईजीपी/मुद्रा इकाइयों के विस्तार के लिए पीएमईजीपी के अंतर्गत दूसरी वित्तीय सहायता के लिए दिशानिर्देश

1. **स्कीम** : एमएसएमई मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के अंतर्गत खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केबीआईसी), वर्तमान में राष्ट्रीय-स्तरीय नोडल एजेंसी के रूप में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) का कार्यान्वयन कर रहा है। राज्य स्तर पर, यह स्कीम राज्य केवीआईसी निदेशकों, राज्य खादी और ग्रामोद्योग बोडों (केवीआईबी), जिला उद्योग केंद्रों (डीआईसी) और बैंकों के माध्यम से कार्यान्वित की जाती है। दिनांक 31.3.2018 की स्थिति के अनुसार, देश में कुल 4,66,471 इकाइयां स्थापित की गई है। स्कीम की सफलता को ध्यान में रखते हुए और जैसा उद्यमियों/इकाई धारकों द्वारा अनुरोध किया गया था तथा जिस प्रकार प्रबंधन विकास संस्थान (एमडीआई), गुडगांव ने अपनी मूल्यांकन अध्ययन रिपोर्ट में सिफारिश की थी, सरकार ने 5,500 करोड़ रु. के वित्तीय परिव्यय के साथ वर्ष 2017-18 से 2019-20 तक 3 वर्ष की अवधि के लिए 12वीं पंचवर्षीय योजना से आगे पीएमईजीपी को जारी रखने के लिए अनुमोदित किया है। ऐसा अनुमोदन देते समय मौजूदा इकाइयां जो कारोबार, लाभ कमाने और ऋण के भुगतान मे मामले में अच्छा कार्य-निष्पादन कर रही है के उन्नयन के लिए सब्सिडी के साथ दूसरा ऋण स्वीकृत करने का प्रावधान भी किया गया है। तदनुसार, 15ः (पूर्वोत्तर क्षेत्र और पहाड़ी राज्यों के लिए 20ः) की सब्सिडी के साथ विनिर्माण इकाइयों के लिए 1 करोड़ रु. तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी और सेवाध्व्यापार इकाइयों के लिए 25.00 लाख रु. तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

2. **उद्देश्य** : सफल/अच्छा कार्य-निष्पादन करने वाली इकाइयों के उन्नयन और विस्तार के लिए अतिरिक्त वित्तीय सहायता की आवश्यकता को पूरा करना। नई प्रौद्योगिकीध्स्वचालन लाने के लिए उद्यमियों की आवश्यकता को पूरा करना ताकि मौजूदा इकाई का आधुनिकीकरण किया जा सके। निधि की अतिरिक्त किस्त मिलाकर मौजूदा इकाइयों की उत्पादकता को बढ़ाना। अतिरिक्त वेतन रोजगार सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त वित्तीय सहायता के साथ मौजूदा इकाई की क्षमता को बढ़ाना।

3. **वित्तीय सहायता की मात्रा और प्रकृति**ः मौजूदा पीएमईजीपी/मुद्रा इकाइयों के उन्नयन के लिए दूसरा ऋण :

लाभार्थियों की श्रेणियाँ	लाभार्थी का अंशदान	सब्सिडी दर (परियोजना लागत की)
सभी श्रेणियां	10% (प्रस्तावित विस्तार /उन्नयन लागत का)	15% (पूर्वोत्तर क्षेत्र और पहाड़ी राज्यों में 20%)

क) उन्नयन के लिए विनिर्माण क्षेत्र के अंतर्गत स्वीकार्य परियोजनाध इकाई की अधिकतम लागत 1.00 करोड़ रु. है, और अधिकतम सब्सिडी 15 लाख रु. (पूर्वोत्तर क्षेत्र और पहाड़ी राज्यों के लिए 20 लाख रु.) होगी।

ख) उन्नयन के लिए सेवा/व्यापार क्षेत्र के अंतर्गत स्वीकार्य परियोजना/इकाई की अधिकतम लागत 25 लाख रु. है, औ र अधिकतम सब्सिडी 3.75 लाख रु. (पूर्वोत्तर क्षेत्र और पहाड़ी राज्यों के लिए 5 लाख रु.) होगी।

ग) सभी श्रेणियों के लिए, सब्सिडी दर (परियोजना लागत की) 15ः (पूर्वोत्तर क्षेत्र और पहाड़ी राज्यों में 20ः) है। सभी श्रेणियों के लिए लाभार्थी का अंशदान 10ः होगा।

घ) कुल परियोजना लागत की शेष राशि बैंक द्वारा सावधि ऋण के रूप में प्रदान की जाएगी। आवेदक ऋण राशि का उपयोग अचल संपत्तियों अर्थात, भवन निर्माणध्आवश्यक नई मशीनरियों की खरीद/मशीनरी की स्थापना आदि पर निवेश के लिए कर सकता है।

ड) सावधि ऋण घटक (भवन/औद्योगिक शेड, मशीनरी और उपकरण आदि का निर्माण) के अंतर्गत, स्वयं के भवन का निर्माण को शामिल किया जा सकता है और निर्माण की सीमा आमतौर पर कुल स्वीकृत परियोजना लागत का 25ः से अधिक नहीं होनी चाहिए।

च) निर्माण की लागत सहित पूंजीगत व्यय घटक को कुल परियोजना लागत का 60ः तक होना चाहिए। कार्यशील पूंजी लागत 40ः तक होगी। तथापी, वित्तपोषन बैंक परियोजना की

प्रकृति के आधार पर ऋण की स्वीकृति के समय मानदंड तय कर सकता है।

4. लाभार्थियों के लिए पात्रता शर्तें : प. पीएमईजीपीध्मुद्रा स्कीम के अंतर्गत वित्तपोषित सभी मौजूदा इकाइयां जिनका मार्जिन मनी दावा समायोजित कर दिया गया हो और पहले लिए गए ऋण का निर्धारित समय में भुगतान कर दिया गया हो, लाभ लेने के लिए पात्र हैं।

1- इकाई विगत तीन वर्षों से लाभ कमा रही हो।

2- लाभार्थी उसी वित्तपोषक बैंक को आवेदन कर सकता है जिसने पहला ऋण प्रदान किया हो, अथवा अन्य किसी बैंक को, जो दूसरे ऋण के लिए ऋण सुविधा प्रदान करने को तैयार हो।

3- उद्यम पंजीकरण का पंजीकरण अनिवार्य है।

4- दूसरा ऋण अतिरिक्त रोजगार सृजित करने वाला होना चाहिए।

5. कार्यान्वयन एजेंसियाँ : क). यह स्कीम खादी और ग्रामोद्योग आयोग अधिनियम, 1956 द्वारा बनाई गई एक सांविधिक निकाय, केवीआईसी द्वारा कार्यान्वित की जाएगी, जो एक एकल राष्ट्र-स्तरीय नोडल एजेंसी होगी।

ख). राज्य स्तर पर, यह स्कीम केवीआईसी के राज्य निदेशकों, राज्य केवीआईबी और ग्रामीण क्षेत्रों में जिला उद्योग केंद्रों के माध्यम से कार्यान्वित की जाएगी। शहरी क्षेत्रों में, यह स्कीम केवल राज्य जिला उद्योग केंद्रों (एसडीआईसी) द्वारा कार्यान्वित की जाएगी। केवीआईसी राज्य केवीआईबी, राज्य डीआईसी के साथ समन्वय करेगा और ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में इकाइयों के कार्य-निष्पादन की निगरानी करेगा। केवीआईसी और डीआईसी स्कीम के अंतर्गत लाभार्थियों की पहचान में एनएसआईसी, एमएसएमई- डीआई, आरएसईटीआई आरयूडीएमईटीआई, आईटीआई और अन्य समान संस्थानों, पंचायती राज संस्थानों और अन्य प्रतिष्ठित गैर-सरकारी संगठनों को भी शामिल करेगा। कयर बोर्ड, कयर इकाइयों के उन्नयन, पथ-प्रदर्शन और मार्गदर्शन के लिए कवर इकाइयों की पहचान करने में शामिल होगा।

6. वित्तीय संस्थाएं :

क. सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंका

ख. सभी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक।

ग. प्रधान सचिव (उद्योग/एमएसएमई)/आयुक्त (उद्योग) की अध्यक्षता वाली राज्य स्तरीय कार्य बल समिति द्वारा अनुमोदित सहकारी बैंक।

घ. प्रधान सचिव (उद्योगध्एमएसएमई)/आयुक्त (उद्योग) की अध्यक्षता वाली राज्य स्तरीय कार्य बल समिति द्वारा अनुमोदित निजी अनुसूचित वाणिज्य बैंका

ङ. भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी)।

7. लाभार्थियों की पहचान और अन्य प्रक्रियात्मक औपचारिकतायें:

1- देश भर से इकाइयों का चयन किया जाएगा।

2- पीएमईजीपी ई-पोर्टल पर, उन्नयन के लिए मौजूदा इकाइयों द्वारा आवेदन जमा करने के लिए एक अलग आवेदन लिंक प्रदान किया जाएगा।

3- प्राथमिक जांच के एजेंसियां बाद, राज्यध्जिला स्तरीय (केवीआईसीध्केवीआईसी/डीआईसी) आवेदन लाभार्थी द्वारा चयन किए गए बैंक को आवेदन अग्रेषित करेंगी। बैंकों को आवेदन की शिफारिश करने से पहले, राज्य/जिला स्तरीय एजेंसियां यह सुनिश्चित करेंगी कि आवेदन सभी संदर्भों में पूर्ण है और आवेदक ने दिशानिर्देशों में उल्लखित सभी मानदंडों को पूरा किया है। एजेंसियों को आवेदन की जांच 15 दिनों के भीतर पूरी करनी होगी और यदि आवेदन सही पाया जाता है तो, आवेदन बैंकों को अग्रेषित करेगी। यदि आवेदन सही नही पाया जाता है तो, उस मामले में वह 15 दिनों के भीतर, कारणों सहित आवेदन को वापस कर सकती हैं।

4- संबंधित बैंक 60 दिनों के भीतर परियोजना प्रस्ताव का मूल्यांकन और प्रस्ताव को स्वीकृत करेगा। ऋण जारी होने के बाद, बैंक पीएमईजीपी इकाइयों के लिए प्रचलित प्रक्रिया के अनुसार मार्जिन मनी सब्सिडी (एमएमएस) का दावा करेगा। मार्जिन मनी सब्सिडी को 18 महीने के लिए सावधि जमा रसीद (टीडीआर) के रूप में रखा जाएगा। टीडीआर पर कोई व्याज नहीं दिया जाएगा और संवितरित ऋण की संबंधित राशि पर कोई ब्याज नहीं लिया जाएगा। टीडीआर राशि, मशीनरी की स्थापना के बाद और कार्यान्वयन एजेंसी तथा बैंक के संयुक्त वास्तविक सत्यापन की सकारात्मक रिपोर्ट के आधार पर बाद में ऋण खाते में समायोजित की जाएगी।

5- सभी हितधारकों द्वारा निगरानी के उद्देश्य से पीएमईजीपी ई-पोर्टल में वित्तीय सहायता की दूसरी किस्त के लिए एक अलग एमआईएस प्रदान किया जाएगा।

6- कार्यान्वयन एजेंसियों और बैंकों द्वारा इकाई का संयुक्त वास्तविक सत्यापन वर्ष में कम से कम दो बार किया जाएगा और संयुक्त वास्तविक सत्यापन का ब्यौरा पोर्टल पर अपलोड किया जाएगा। केवीआईसी द्वारा सभी इकाइयों की जियो- टैगिंग की जाएगी।

7- उन्नयन के दो वर्ष पूरे होने पर, स्वतंत्र एजेंसी को आउटसोर्स करके केवीआईसी द्वारा तृतीय पक्ष वास्तविक सत्यापन संचालित किया जाएगा।

8- सीजीटीएमएसई कार्यक्षेत्ररू लाभार्थी अपेक्षित सीजीटीएमएसई शुल्कों का भुगतान करके सीजीटीएमएसई स्कीम के अंतर्गत परियोजना को कवर करने का विकल्प चुन सकता है।

8. अपलोड किए जाने वाले दस्तावेज : 1- बैंक द्वारा जारी पिछला श्रृण स्वीकृति पत्रश, श्पिछले ऋण के लिए समायोजित किए गए मार्जिन मनी दावोंश का प्रमाण और श्पूर्ण ऋण भुगतान के लिए बैंक प्रमाणपत्र।

2- इकाई के विस्तार/उन्नयन के लिए परियोजना रिपोर्ट।

3- पासपोर्ट के आकार की फोटो।

4- विगत तीन वर्षों का आईटी रिटर्न।

5- विगत तीन वर्षों के चार्टर्ड अकाउंटेंट द्वारा प्रमाणित वार्षिक खाते।

9. विविधः स्कीम का मुख्य उद्देश्य अच्छा कार्य-निष्पादन करने वाली इकाइयों का उन्नयन करने में सहायता करना है। लाभार्थी इकाइयों की पात्रता, नकारात्मक सूची, बैंकों द्वारा मार्जिन मनी के दावों की प्रक्रिया और मौजूदा ई-पोर्टल के माध्यम से मार्जिन मनी सब्सिडी जारी करने और टीडीआर में सब्सिडी बनाए रखने से संबंधित अन्य बिन्दु, जो कि जारी मौजूदा पीएमईजीपी स्कीम में पहले से ही शामिल हैं वह दूसरी वित्तीय सहायता पर भी लागू होंगे। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि दूसरी वित्तीय सहायता केवल अच्छा कार्य-निष्पादन करने वाली पीएमईजीपी/मुद्रा इकाइयों की मौजूदाध्संबंधित गतिविधियों के विस्तारध्उन्नयन पर भी लागू होगी। आगामी अंक में प्रधानमंत्री मुद्रा लोन योजना 2021 (Mudra Yojana) के विभिन्न आयामों के बारे में जानकारी दी जाएगी।

इच्छुक पाठक पूर्ण विवरण के लिए ई-मेल nikitachaturvedi17@gmail.com पर संपर्क करे।

तीन मज़ेदार कहानियाँ

- रेनू चतुर्वेदी, मैनपुरी

1. गहरा अर्थ*

मैंने एक छोटे बच्चे को लिफ्ट में आइसक्रीम खाते देखा। चिंता के कारण मैंने यूँ ही कहा, इतनी ठंड में आइसक्रीम खाओगे तो बीमार हो जाओगे!

बच्चे ने जवाब दिया, मेरी दादी 103 साल तक जिंदा रहीं।

मैंने पूछा, क्या वो भी आइसक्रीम खाती थीं?

बच्चे ने कहा, नहीं, बल्कि इसलिए कि वो दूसरों के मामलों में दखल नहीं देती थीं!

कितना गहरा सबक! अब समझ आया कि मैं इतनी जल्दी क्यों बूढ़ा हो रहा हूँ—बहुत ज्यादा फालतू की टांग अड़ा रहा हूँ!

2. थकान*

आजकल हर जगह ठग घूम रहे हैं। अभी-अभी खबरों में देखा कि लोगों की जमा पूंजी अचानक गायब हो गई—हज़ारों-लाखों रुपये बिना किसी सुराग के उड़ गए। घबराकर मैं फ़ौरन अपनी साइकिल से बैंक पहुँचा, एटीएम कार्ड डाला, पासवर्ड डाला, और बैलेंस चेक किया। शुक्र है, मेरे 8 अभी भी सुरक्षित थे! मैंने राहत की साँस ली।

हे भगवान, कितना तनावपूर्ण था! कसम खाता हूँ, अब कभी खबरें नहीं देखूँगा—बहुत टेंशन हो जाता है!

बैंक से बाहर निकला तो और भी ज्यादा थकान महसूस हुई—मेरे 8 तो बच गए, लेकिन मेरी साइकिल गायब थी!

3. संयम रखना*

एक युवती ट्रेन में चढ़ी और देखा कि उसकी सीट पर एक आदमी बैठा हुआ है। उसने विनम्रता से टिकट देखा और कहा, सर, मुझे लगता है कि आप मेरी सीट पर बैठे हैं।

आदमी ने गुस्से में अपना टिकट निकाला और चिल्लाया, ध्यान से देखो! यह मेरी सीट है! तुम अंधी हो क्या?!

लड़की ने चुपचाप उसका टिकट ध्यान से देखा और बहस करना बंद कर दिया। वह शांति से उसके बगल में खड़ी हो गई।

ट्रेन चलने के कुछ मिनट बाद लड़की ने हल्की आवाज़ में कहा, सर, आप गलत सीट पर नहीं बैठे हैं, लेकिन गलत ट्रेन में बैठे हैं। यह ट्रेन कोलकाता जा रही है, और आपकी टिकट मुंबई की है।

कुछ संयम ऐसा होता है जो लोगों को उनके व्यवहार पर पछताने पर मजबूर कर देता है। अगर चिल्लाने से सब कुछ हल हो जाता, तो गधों का ही राज होता!

सावधान - गर्भावस्था में दवाऐं संभाल कर लें..

- डॉ. अंजना चतुर्वेदी
एम.बी.बी.एस, डी.सी.एच.
पी.जी.डी., एम.सी.एच.

प्रायः सभी घरों में गर्भवती बहु-बेटियों से आहार ब्यौहार के बारे में तरह-तरह का ख्याल रखने को कहा जाता है। यह इस बात का घोतक है कि लोग इस स्थिति में प्रतिकूल बातों के हानिकारक प्रभावों की संभावना से परिचत हैं इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण विषय में अभी पर्याप्त जागरूकता नहीं है। मगर हमारा संकेत गर्भावस्था में इस्तेमाल को जाने वाली दवाओं की ओर है।

थेलिडोमाइड डिजास्टर

आधुनिक चिकित्सा जगह को एक अभूतपूर्वक दुर्घटना का उल्लेख यहां प्रासंगिक होगा बात 1960-61 के आसपास की है पश्चिमी जर्मनी की माताएं ऐसे शिशुओं को जन्म दे रही थी जिनके पैरों और कुछ दूसरे अंगों में गंभीर विकृतियां थीं। उनमें

जांघो, टांगों भुजाओं और कलाइयों की हड्डियों का विकास नहीं हुआ था हाथ-पैर के सामान्य अथवा अपूर्ण कुछ विकसित पंजे सीधे जड़-धड़ के संबंधित स्थल से कुछ इस तरह लगे हुये थे जैसे मछलियों के डैने होते है इसे फोकोमीलिया कहा जाता है।

सामान्यतः यह विकृति बहुत कम देखने में आती है 1959 से पूर्व 10 वर्षों में पश्चिमी जर्मनी के अधिकांश क्लिनिकों में ऐसा एक भी मामला नहीं हुआ था इसके बाद 1959 में 17, 1960 में 126 और 1961 में 447 फोकोमीलियां शिशु पैदा हुए संभावित कारण के रूप में रूबेला वाइरल रेडियों धर्मिता, एक्सरें का प्रभाव हारमोन द्रव्यों का प्रयोग, संरक्षित भोजन में मिलाएं जाने वाले एडिटिव और ''प्रिजरवेटिव'' तथा ''ओरल कंट्रॉसोप्टिव'' (संतति निरोध के लिए खाई जाने वाली गोलियों) के प्रयोग आदि अनेक बातों पर विचार किया गया। तभी एक चिकित्सक ने इन माताओं से पूछताछ के दौरान पाया कि उनमें से 50 प्रतिशत ने गर्भावस्था में ''कंटरगांन' नाम एक नई दवा इस्तेमाल की थी। 1961 में बाल विशेषज्ञों के एक सम्मेलन में इस चिकित्सक ने एक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बिना उक्त दवा का नाम इंगित किए यह शंका व्यक्त की। उसी रात सम्मेलन में भाग ले रहा एक दूसरा चिकित्सक उसके पास आया और पूछा कि यह दवा कंटरगान तो नहीं है उसमें बताया कि उसकी पत्नी ने भी कंटरगान का प्रयोग

किया था और फोकोमीलियां शिशु का जन्म दिया।

उक्त चिकित्सक के पास इसी तरह के कई पत्र भी आए, जल्दी ही यह बात तय हो गई कि उक्त दवा और ऐसी ही कई दूसरी दवाओं में मौजूद ''थेलिडोमाइड'' द्रव्य फोकोमीलीया का कारण बना था, पश्चिमी जर्मनी ने इस तरह के लगभग 100000 बच्चे पैदा हुए इनमें से 5 हजार इन विकृतियों के साथ जीवित रहे ब्रिटेन में भी ऐसा ही स्थिति बनी, अमरीकी सरकार ने इस नई दवा को अपने यहां आने की अनुमति नहीं दी थी आस्टेलिया बेलजियम ब्राजिल, कनाड़ा पूर्वी जर्मनी मिस्र, लेबनान, पेरू, इजराइल, स्पेन, स्वीडन और स्विटजरलैण्ड की सरकारों ने भी यद्यपि इसके दवाएं इतनी लोकप्रिय हो गई कि भौगोलिक सीमाओं को लांघकर ये इन देशों में पहुंच गई थी अतः इन देशों में भी फोकोमीलियां शिशु पैदा हुए।

तत्काल ही ये दवाएं बाजारों से हटा ली गई प्रभावित माताओं को हरजाने के रूप में निर्माताओं द्वारा बड़ी रकमे दी गई है कि इन गर्भवती महिलाओं में इस दवा का प्रयोग अनिवार्य नहीं था यह दवा गर्भावस्था में कतिपय सामान्य अरूचिकर लक्षणों के उपचार के लिए एक निदाकरी विकल्प रूप में ही इस्तेमाल की गई थी यद्यपि विकल्प के रूप में पूर्व परिचित हानिकारिक दवाएं उपलब्ध थी, परन्तु निर्माताओं विज्ञापनों और कुछ नई चीजों के आकर्षण इसका प्रयोग चिकित्सकों और रोगियों दोनों में एक लोकप्रिय प्रचलन कर दिया था।

इस घटना को ''थेलिडोमाइड डिजास्टर की संज्ञा दी गई इसके बाद सारी दुनिया में चिकित्सा और औषधि निर्माण के तकनीकी क्षेत्रों में और साथ सामान्य प्रबुद्ध नागरिकों में गर्भावस्था दवाओं के अवांछित प्रभावी के बारे में जागरूकता बढ़ी है।

मां से भ्रूण को – गर्भस्थ भ्रूण और मां की रक्त संचय व्यवस्थाएं अलग होते हुए गर्भावस्था की गर्भनाल या जरायु (प्लेसेंटा) बच्चे की नाल के द्वारा परस्पर इस तरह संबद्ध होती है कि मां के रक्त से अभी जन्तु पोषक तत्व बच्चे के रक्त में पहुंचते है। इसी व्यवस्था के जरिए मां के शरीर से अवांछित चीजें भी बच्चे के शारीरिक पहुंच जाती हैं, जब मां सिगरेट और सिगार पीती हैं तो निकोटीन और अल्कोहल भ्रूण के शरीर में भी पहुंचते है इसी तरह दवाएं इस्तेमाल करती हैं, उनमें से अधिक द्रव्य भी भ्रूण के शरीर में जाते हैं.

टेरेटोजनक द्रव्य – गर्भावस्था के बिल्कुल शुरू में गर्भस्थ भूरण की 3–10 सप्ताह की उम्र अथवा महिला के प्रथम दिन से 5–12 सप्ताह की अवधि में भूरण तेजी से विकसित होता है इस अवधि में भूरण के भीतर पहुंचने वाले विजातीय द्रव्य उसकी रचना को प्रभावित करके तरह–तरह विकृतियां पैदा कर सकते है इसे टेरेटोजनेसिस (टेरेटास–राक्षस और जेनेसिस– व्युत्पति) कहते है गंभीर विकृतियां भूरण के रूप को राक्षसी बना देती है।

भ्रूण की सुरक्षात्मक प्रक्रियाएं

दवाएं चाहे जो भी हो, शरीर के लिए विजातीय होती है। शरीर की बहुविध प्रक्रियाएं इन्हे निष्प्रभावी करने की कोशिश करती है इनमें जिगर और उत्सर्जक प्रक्रियाओं की विशेष भूमिका रहती है, गर्भस्थ भ्रूण के शरीर में पहुंचने पर ये द्रव्य अधिक परिणाम और ज्यादा समय तक प्रभावी बने रहते हैं। जब कुछ गिनीचुनी सरल दवाएं ही प्रयोग की जाती थी तब यह संभावना भी कम बना करती थी पर अब चिकित्सा के वर्तमान परिवेश में रोजाना नई–नई अपरिचित औषधियां इस्तेमाल की जाती है अतः उक्त संभावनाएं भी बढ़ रही है।

दवाओं का सर्वाधिक प्रभाव

दवाओं का सर्वाधिक प्रभाव होता है जब बहुधा मां को यह ज्ञात भी नहीं होता है कि गर्भवती हो गई है यह जानकारी तो तभी हो पाती जब अगला मासिक धर्म नहीं होता, उस समय हाल का संभ्रूण गर्भाशय में कहीं ठिकाना पाकर तेजी से विभाजित होता हुआ अपना प्रारंभिक आकार बना रहा होता है भूरण में यह प्रभाव संबंधित दवाओं की इतनी अल्प मात्रा से ही हो सकता है जिनसे मां को कोई हानि नहीं पहुंचती है।

कुछ दवाएं सुनिश्चित ज्ञात टेरेटोजनक प्रभाव रखती है इनमें एंटी कैंसर द्रव्य (कैंसर रोगों के इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवाएं) और एंड्रीकोर्थकल स्टीरायड (कोंओसोन) जैसी दवाएं प्रमुख है कुछ दवाएं संभवः टेरेटोजनक हो सकती है एंटीएपिलेप्टिक मिरगी रोग के इलाज की दवाएं बहुविध सैक्स हारमोन, अल्कोहल (शराब में उपस्थित) और धूम्रपान (तम्बाकू) सामान्य प्रयोग की कई दवाईयों पर भी इस प्रभाव की शंका की जा रही है ''एसपिरिन (लोकप्रिय दर्दनिवारक) गैसट्रिक एंटेसिड कोट्राइमोकसाजोल एक लोकप्रिय आधुनिक सल्फा औषधि, जो अनेक नामों से बाजार में बिक रही है और छूत के अनेक रोगों के इलाज के लिए व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाती है (न्यूरोलैप्टिक) पागलपन के चिकित्सा के लिए इस्तेमाल की जाने वाली ''आधुनिक शामक दवा (बेंजडायाजेपीन कुछ निद्राकारी दवाएं जैसे नाइट्रोजिपाम) और डाइयूरेटिक (मूत्रक) द्रव्य आदि।

ऐसी संभावना रखने वाली सभी दवाओं की सूची प्रस्तुत कर पाना मुमकिन नहीं हैं। यह प्रभाव इन बातों पर भी निर्भर करता है कि दवा गर्भावस्था की किस अवधि में कितनी मात्रा में और कितने समय तक इस्तेमाल की जाती है। गर्भावस्था के उत्तर भाग में भूरण रूप ले विकसित शिशु का आकार ले चुकता है अतः अब रचनागत विकृतियां नहीं बनाती कुछ दूसरों हानिकार प्रभाव से ''एंड्रोजन और प्रोजेस्ट्रोन'' का प्रयोग गर्भस्थ शिशु में मैस्कूलिनाइजेशन (पुरूषवत लक्षणों का विकास) कर सकते है ''आयोडाइड का इस्तेमाल'' फीटल गायटर (गलगंड) पैदा करते है, टेट्रा साइकलीन (एक एंटीबायोटिक) दांतों और हड्डियों के विकास के व्याघात कर सकता है।

प्रजननशील वर्ग की महिलाओं में बिल्कुल नई अपरिचित दवाओं का तब तक सेवन नहीं करना चाहिए जब तक अनिवार्य न हो। जब कोई ऐसी स्थिति बने कि किसी गंभीर रोग के इलाज के लिए किसी महिला को कोई ऐसी दवा लंबे समय तक देनी हो जिसके बारे में भूरण प्रति हानिकार संभावना बलवती हो और दवा का प्रयोग एंडिनोकार्टिकल स्टीरायड, एंटी एपिलेप्टिक अथवा एंटीट्यूबरकुलर दवाएं तो फिर ऐसी महिला में कोई उपयुक्त विश्वासनीय संतरित निरोधक विधि अनिवार्यतः इस्तेमाल कराई जानी चाहिए यह चिकित्सक की ही जिम्मेदारी है कि वह इसके लिए दंपति को प्रेरित और प्रशिक्षित करें।

गर्भस्थ शिशु पर दवा का प्रभाव

''टाकसीमिया ऑफ प्रेगनेंसी'' के उपचार में इस्तेमाल किए जाने वाले ''थायाजाइड डाइयूरिकटक'' नवजात शिशु के रक्त में प्लेटलेटों की कमी (थ्रौबोसाइटोपोनिया) का करण बन सकते है तब ऐसे नवजात शिशु में असामान्य रक्तस्त्राव हो सकता है। जो दवाएं मां को माफिक नहीं बैठती, उनसे गर्भस्थ शिशु भी प्रभावित हो सकता है ऐसा भी हो सकता है कि मां अप्रभावित रहे और बच्चे में एलर्जी का (सेंसिटाइजेशन) विकास हो जाएं। कुछ दवाएं बच्चे

की आंखों के लैंस के प्रोटीना को इस तरह प्रभावित कर सकती है कि वे अपारदर्शक बन जाते है तब उक्त कनजेनिटल केंटरेक्ट (जन्मजात मोतिया बिंद) लेकर पैदा होता है।

क्लोरोक्वीन (मलेरिया और अमीबाई- मिसिस की चिकित्सा के लिए प्रयोग की जाने वाली दवा) और क्लोप्रोमा जीन (एक प्रमुख शामक दवा) बच्चे की आंखों में इक्ट्ठी होकर रेटिना (दृष्टिपटल) को प्रभावित कर सकती है ओरल एंटीडायबिटिक दवाएं और एमीनोग्लाइ कोसाइड (स्ट्रेप्टोमाइसिन, कानामाइसिन, नियोमाइसिन और जैटामाइसिन आदि एंटी- बायोटिक) भी हानिकर बन सकती है गर्भस्थ शिशु को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने के अलावा कुछ दवाएं प्लेसेंटा, गर्भाशय, मां के शरीर का हार्मोन संतुलन और बायोकेमिस्ट्री को प्रभावित करके बच्चे के लिए हानिकर बन सकती है। प्रसव से पूर्व मां को दी गई कुछ दवाएं भी नवजात शिशु में अवांछित प्रभाव पैदा करती है। रिसर्पीन (रक्तचाप के लिए एक दवा) नवजात बच्चे को सुस्त की प्रक्रिया को जन्मे असामान्य का कारण बन सकते है इस समय एसपिरीन और इंडोमीथासीन ''दर्द निवारक'' दवा का प्रयोग प्रसव प्रारंभ होने में विलंब कर सकता है व रक्तस्त्राव बढ़ा सकता है।

''ओपएट'' (अफीम से बनी और अफीम जैसी प्रभावयुक्त) दवाएं शामक पदार्थ शरीर की सुरक्षा करने के लिए दी जाने वाली दवाएं नवजात शिशु की श्वास प्रक्रिया को शिथिल करती है डायजिपाम (एक बहुप्रयुक्त नींद लाने वाली दवा) और ऐसी दूसरी दवाएं बच्चे में असामान्य शिथिलता और सुस्ती पैदाकर के स्तनपान में कठिनाई पैदा करती हैं। प्रायः रक्त विवेचना से भयभीत होने की जरूरत नहीं है अभिप्राय इतना ही है कि संभावनाओं के प्रति जागरूकता पैदा की जा सके। पाठकों को सहज जिज्ञासा होगी कि इस संदर्भ में क्या किया जाए, क्या वे चिकित्सक को इस दृष्टि से खबरदार कर सकते है।

इस क्षेत्र में पहला और प्रमुख व्यवसायिक नैतिक दायित्व चिकित्सक का ही बनता है इस दृष्टि से निम्नलिखित बाते आवश्यक है। सर्वप्रथम चिकित्सकों को इस दृष्टि से जागरूक रहते हुए अपने ज्ञान को नवीनतम बनाएं रखना चाहिए जो दवाएं वे इस्तेमाल करते है उनके बारे में समग्र जानकारी (विशेषकर उक्त संभावनाओं की दृष्टि से) उन्हे रहनी चाहिए। आमतौर पर सामान्य चिकित्सक सुविधा जल्दीबाजी और गलत आदतों के कारण लक्षणों उपचार का ढंग अपनाते है मरीज के लक्षणों की शिकायत बनाई और हर लक्षण के लक्षणों की शिकायत के लिए दवा का नुसखा हाजिर इलाज का यह ढंग गलत है सबसे पहले तो कुछ निदान बनाना जरूरी है तब दवा देने के बारे में इस बात का जायजा लेकर निर्णय करना चाहिए कि क्या सचमुच किसी दवा की जरूरत है या बिना दवा के ही स्थिति ठीक हो सकती है.

इसके लिए स्थिति विशेष के संदर्भ में चिकित्सक को एहसास करना होगा कि उस स्थिति का बिना दवा के उपचार करना अथवा दवाएं देकर उचित संभावनाओं को खतरा उठाना मां और बच्चे के संदर्भ में क्या विकल्प बेहतर बनेगा तदनुसार ही निर्णय लेना होगा। गर्भावस्था में सामान्य अरूचिकर लक्षणों - कब्ज खांसी, जुकाम, मतली, वमन, अनिद्रा आदि के लिए दवाओं का प्रयोग तब तक न करें, जब तक अनिवार्य न हो आहार विहार संबंधी सावधानियां और परिवर्तन पर्याप्त होने चाहिए। गर्भवती महिलाओं में केवल वही दवाएं इस्तेमाल की जानी चाहिए जो दवाएं चिकित्सा के क्षेत्र में पिछले 10-15 सालों से व्यापक प्रयोग कें रही हो और अशुभ संभावनाओं से भलीभांति परिचित हो। ''थेलोडामाइड डिजास्टर'' के बाद से सभी दुनिया के सभी देशों में नई दवाएं जारी करने से पूर्व प्रयोगात्मक प्राणियों में गर्भस्थिति से पूर्व यौन संमागम के समय से प्रारंभ करके संपूर्ण गर्भावस्था में इनका प्रयोग करके यह सुनिश्चित किया गया है कि प्रस्तुत की जा रही है नई दवा इन दृष्टियों से निरापद है।

इसलिए नई दवाओं के बारे में लगातार सतर्क नजर जरूरी है रोगी महिला से सिर्फ इतना पूछ लेना कि वह गर्भवती है या नही काफी नहीं होता यह संभावना भी हो सकतीहै कि कोई दवा शुरू करते वक्त वह महिला गर्भवती ही न हो पर दवा का प्रयोग प्रारंभ करने के बाद गर्भधारण कर ले इस स्थिति में शुरू करते वक्त 2-3 सप्ताहों में तो वैसे भी कुछ ज्ञात नहीं हो पता है और इसी अवधि में दवाओं की हानिकर संभावना के प्रति भूरण सर्वाधिक संवेदनशील होता है इसलिए सही तो यह होगा कि प्रजननशील अवस्था वर्ग की सभी महिलाओं के प्रति निरपवाद सतर्कता बरती जाए।

गर्भस्थ शिशु पर दवा का प्रभाव/गर्भावस्था व उच्च रक्तचाप गर्भवती महिलाओं में कई बार उच्च रक्तचाप की शिकायत मिलती है। उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) कम करने की विभिन्न दवाईयां प्रयोग की जाती है निम्नलिखित दवायें कितनी सुरक्षित है इसका वर्णन आगे है -

1. **मिथाइल डोपा** - सर्वप्रथम यही दवा उच्च रक्तचाप कम करने के लिये स्त्री रोग विशेषज्ञों/चिकित्सकों द्वारा दी जाती है इसे सबसे सुरक्षित माना गया है।
2. **लाबेटालोल** - गर्भवती महिला के उच्च रक्तचाप व उससे होने वाली जटिलताओं के मद्देनजर यह दवा उपयोग की जाती है। यह 50 मिग्रा. दिन में दो बार दी जाती है स्त्री रोग विशेषज्ञ इसे भी सुरक्षित मानती है।
3. **अटेनोलाल** - यह बीटा-1 रोधक (ब्लाकर) उच्च रक्तचाप करने के काम आती है। यह दवा गर्भवती को पहले तिमाही में नही देनी चाहिये। प्रसव से 2-3 दिन पूर्व इसका प्रयोग बंद कर देना चाहिये। माता के स्तन से आने वाले दूध में यह पाया जाता है इसलिये दूध पीते बच्चे की माता को अटेनोलाल नहीं

देना चाहिए।

4. सोडियम नाइट्रोप्रसाइड बहुत ज्यादा जरूरत हो तभी दे नहीं दे तो अच्छा है।
5. **प्राजोसिन** – गर्भवती महिलाओं को उक्त रक्तचाप के लिये नहीं दे तो अच्छा है।
6. ग्लिसराइल ट्राइनाइट्रेट यह दवा हार्ट अटैक, हार्ट फेल (एल.वी.एफ.) में प्रयुक्त की जाती है। सावधानी के साथ प्रयोग करें वर्ना उच्च रक्तचाप के लिये इस दवा का प्रयोग नहीं करें। गर्भवती की जान को खतरा हो, तभी इसका प्रयोग करे वर्ना नहीं करे।
7. **निफेडिपीन** – यह केलशियम चेनल रोधक है। केवल इमरजेन्सी (आपात काल) में इसका प्रयोग करें वर्ना नहीं करें। दूध पिलाने वाली माता के लिये यह दवा सुरक्षित नहीं है।
8. **ऐम्लोडेपीन** – उच्च रक्तचाप के लिये दी जानी वाली यह दवा बहुत असरकारक है इसका प्रयोग सीमित मात्रा में अति आवश्यक हो तब करें। माता के दूध में यह दवा उत्सर्जित हो आ जाती है। गर्भवती माता में निम्नलिखित दवाये बिल्कुल नहीं दी जानी चाहिए।

1. ए.सी.ई. इनहिबीटर जैसे, लोसारटान, टेलमिसार टान इत्यादि।
2. डिलटीयाजेम (केल्सीयम चेनल रोधक)
3. ग्वानाथाडीन
4. मिनोक्सीडील (रक्तवाहिनी का फैलान करने वाली) या वेसोडायलेटर)

गर्भवती माताओं में खून का थक्का रोकने के लिये (डीप वेन थ्राम्बोसिस व पल्मोनरी एम्बोलिस्म) में एल.एम.डब्ल्यू. हिपेरिन का इस्तेमाल सुरक्षित माना गया है हॉलाकि बहुत ज्यादा शोध नहीं हो पाया है साधारण हिपेरिन देने से गर्भवती महिला में रक्तस्त्राव की संभावना ज्यादा रहती है हॉलाकि यह दवा गर्भस्थ शिशु तक नहीं पहुंच पाती है। वारफेरिन सोडियम (खून पतला करने की दवा) निश्चित रूप से गर्भस्थ शिशु को नुकसान पहुंचाती है इसलिये इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये। एस्प्रीन का प्रयोग 80 मिग्रा./दिन के हिसाब से किया जाता है व प्रसव के चार दिन पूर्व इसका प्रयोग बन्द कर देना चाहिये।

गर्भवती महिला और डायबिटीज मधुमेह

गर्भवती महिला के रक्त में ग्लूकोस की अधिकता कम करने का एक मात्र उपाय इन्सूलिन है इसमें भी हयूमन इंसूलिन का प्रयोग ही करना चाहिए। जानवरों के स्त्रोत से तैयार इंसूलिन, इंसूलिन एंडीबाडी बना सकती है जिससे की समस्या आ सकती है। नियमतः हर डायबिटिक गर्भवती महिला का 34 सप्ताह के बाद अस्पताल में भर्ती रखना चाहिये, प्रसव होने तक। सामान्यतः खाली पेट ग्लूकोरज 90 मि.ग्रा. व खाने के 1 घंटे बाद तक 140 मि.ग्रा. रखना चाहिये। ग्लूकोमीटर द्वारा गर्भवती महिला के ग्लूकोज की जांच नियमित की जानी चाहिये। पेशाब द्वारा ग्लूकोज की मात्रा का कोई खास महत्व नहीं है। गर्भवती महिला जिसे डायबिटिज हो, उसे शिक्षित करना चाहिये साथ ही खुद इंसूलिन लगाने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

गर्भवती महिला और उल्टी व अल्सर

गर्भवती महिला को सुबह उल्टी आने पर डाक्सीलामाइन सुरक्षित रूप में दी जा सकती है। अति आवश्यक पड़ने पर रानिटीडिन, फेमोटिटिव साइक्लीजीन व मेक्लीजीन इत्यादि दवा दी जा सकती है। सीसप्राइड, ओमीप्राजोल, विस्मुथ, प्रोपोनथलीन मिसो- प्रोस्टोल का प्रयोग बिल्कुल वर्जित है। डोमपेरीडोन व ओनडेनसीट्रान भी नहीं देना चाहिये।

गर्भवती महिला और कब्ज

गर्भवती महिला को कब्ज होने पर इसबगोल की भूसी सबसे सुरक्षित मानी गयी है। डल्कोलेक्स व लेकटूलोस, बीसाकोडिल अति आवश्यक होने पर ही दें। गर्भवती महिला का निम्नलिखित परिस्थितियों में ही दवायें लेनी चाहिये।

1. जब साधारणतः सलाद, कसरत इत्यादि से पेट साफ न हों।
2. मरीज को बवासीर व गुदा में फीशर की शिकायत हो।
3. सोनोग्राफी की तैयारी के लिये आंतों का साफ रहना।
4. प्रसव के पहले गुदा की खाली करना।

गर्भावस्था व एन्टीबॉयोटिक

गर्भवती महिला आवश्यकता पड़ने पर डाक्टर की सलाह से प्रोकेन पेनीसीलिन, बेक्जाथीन पेनसिलिन, फिनोक्सीमिथाइल साइरामाइसीन, पेनसीलिन, एम्पीसीलिन, एमोक्सीसीलिन, सीफेक्सीम इत्यादि सुरक्षित एन्टीबायोटिक मानी गयी है।

कार्बनीसीलीन, कोपरसीलिन, सेफ- पोडोक्साइम कोशिशकर गर्भवती महिला को न दें। सीफोटेक्सीम, सेफट्रीओकसोन सीफाक्लोर, सीफापायराजोन व सीफाड्रोक्सील भी सुरक्षित है लेकिन बहुत जरूरी हो तभी दें।

गर्भवती व एन्टीवायरस दवाओं

गर्भवती महिलाओं को एन्टीवायरस दवायें जैसे एसाय- क्लोविर, फेमसीक्लोबिर, वालासाथ- क्लोरिन लूडोविडिन व जालसीटाबिन दवायें अति आवश्यक होने पर डाक्टर की सलाह पर इस्तेमाल करें। इनमें से फेमसीक्लोविर व वाला साथक्लोवीर एन्टीवायरल ज्यादा सुरक्षित है।

गर्भवती महिला व टी.बी.

गर्भवती महिला को आइसोनियाजिड इथामबुटॉल सुरक्षित दे

सकते है अति आवश्यक होने पर रिफाम्पसीन व पाइरीजिनामाइड दें। टीबी के मरीजों को स्ट्रेप्टोमाइसिन इथिया- नोसाइड व केप्रीयामाइसीन बिल्कुल न दे। क्लोफजिमिन व डेप्सोन भी न दें तो अच्छा है।

गर्भवती महिला व मलेरिया

गर्भवती महिला में कुनीन व क्लोरोक्वीन सुरक्षित है। गर्भावस्था के प्रथम 3 महिनों में मेफलोक्वीन व पायरी- मिथामिन न दें। प्राइमाक्वीन भी सुरक्षित नहीं है.

गर्भवती महिला में दर्द निवारक व बुखार की दवाऐं:

1. पेरासीटामोल (क्रोसीन, केल्पॉल इत्यादि) गर्भवती महिला के पूरे 9 माह तक सुरक्षित मानी गई है बशर्ते इसे लम्बे समय न दिया जाये
2. रोफेकाक्सीव नामक दवा बहुत जरूरी होने पर दें। गर्भवती के अंतिम 3 माह में इसे नहीं देना चाहिये।
3. आईब्रूफेन दवा भी सुरक्षित मानी गयी है इस दवा से गर्भस्थ शिशु में विकृति नहीं देखी गयी है।
4. डाक्लोफेनेक नामक दवा यह दर्द निवारक दवा गर्भावस्था के अंतिम 3 माह में नहीं देना चाहिये।
5. इन्डोमिथासिन यह दवा गर्भवती माता को चार से 9 माह के बीच नही देना चाहिये गर्भस्थ शिशु को बहुत नुकसान हो सकता है। इसी तरह मेफेनेमिक एसिड भी गर्भवती महिला को अति आवश्यक होने पर ही दें। अंतिम 3 माह में इसे नहीं दे क्योंकि इससे बच्चे के डक्टस आर्टीटियोसस समय से पूर्व बन्द हो जायेगा और बच्चे की जान को खतरा रहेगा।
6. इसी तरह टीजानिडिन नामक दर्द निवारक दवा गर्भवती व दूध पिलाती माता को नहीं देना चाहिये।
7. एस्प्रीन - यह दर्द निवारक दवा गर्भवती माता के लम्बे समय तक इस्तेमाल करने से बच्चे व माता में खून बहने की प्रवृति बढ़ जाती है। खासकर अंतिम तीन माह में इसे बिल्कुल नहीं देना चाहिये।
8. मारफीन - यह बहुत तेज असरकारक दर्द निवारक दवा है किसी दवा से दर्द दूर न हो तभी इसे दिया जाये साथ ही बच्चे को बचाने का उचित इंतजाम भी होना चाहिये। यह दवा श्वांस में दिक्कत पैदा करती है।
9. पेथीडीन - यह तेल दर्द निवारक दवा अति आवश्यक होने पर ही दे अन्यथान दें।
10. पेन्टाजोसिन - इसे दर्द निवारक दवा को रूप में सावधानी से उपयोग करें। प्रसव होने के बाद इसे दिया जा सकता है।

गर्भावस्था व मिर्गी

सभी मिर्गी में आराम देने वाली दवाये कुछ हद तक टीरेटोजेनिक (टीरेटो -राक्षस, जेनेसिस व्युत्पत्ति) मतलब गंभीर भ्रूण विकृतियां प्रदान करती है। मिर्गी वाली गर्भवती के गर्भस्थ शिशु ठीक पनप नहीं पाते (3 गुना) साधारण गर्भवती महिला के तुलना में। मिर्गी वाली महिला गर्भवती होने के पूर्व अपने विकित्सक से परामर्श कर कोई एक मिर्गीरोधी दवा ले व फोलिक ऐसिड का जरूर इस्तेमाल करें। यह बात गौर करने लायक है कि 90: मिर्गी बीमारी की गर्भवती, गर्भावस्था सामान्य समय काट स्वस्थ शिशु को जन्म देती है

1. थायोपेन्टोन - जरूरी होने पर ही दे।
2. फीनोबारबिटॉल - यह गर्भस्थ शिशु को निश्चित नुकसान पहुंचाती है। क्योंकि बारबीटयूरेट प्लासेंटल बेरियर पार कर लेते है और गर्भस्थ शिशु के हर भाग में नुकसान पहुंचाते है। अगर प्रसव के दौरान गर्भवती महिला को मिर्गी का दौरा पड़ जाये तो इमरजेन्सी में रीससीटेशन के सारे इंतजाम होने चाहिये। प्रसव के दौरान इस दवा के उपयोग में बच्चेदानी (यूटेरस) की सिकुड़ना कम हो जाता है व सिकुड़ने की तीव्रता भी कम हो जाती है।
3. कार्बामाजेपिन - गर्भवती महिलाओं द्वारा इसका प्रयोग करने पर गर्भस्थ शिशु में विकृतियां देखी गयी है। इसलिए अति आवश्यक होने पर (माता को जान का खतरा) ही इसे देना चाहिये अन्यथा नहीं।
4. फेनीटॉयन - इस दवा को खाने वाली गर्भवती महिला के बच्चे को बच्चे के सात दिन में खून बह सकता है। इस दवा का प्रयोग करने वाली महिला के बच्चों के होंठ व तालू कटे हुए पाये गये है। कई बच्चों के हनदय भी कम विकसित होते है।
5. वेलप्रोइक एसिड - इस दवा के इस्तेमाल से गर्भवती महिला में न्यूरल ट्यूब डिफेक्ट नामक तकलीफ देखी गयी है। पहले तीन महिने में। अति आवश्यक होने पर ही यह दवा प्रयोग करें।
6. पेरालडिहाइड - अति आवश्यक होने पर ही इसे दें क्योंकि यह गर्भस्थ शिशु को काफी नुकसान पहुंचाती है। अन्त में मैं यह कहना चाहूंगा कि गर्भवती अवस्था माता व गर्भस्थ शिशु की बहुत ही नाजुक अवस्था रहती है लिहाजा अच्छे चिकित्सक के निरीक्षण में पूरे नौ माह देखरेख व प्रसव होना चाहिये ताकि माता शिशु स्वस्थ हो।
7. डायजेपाम (बेंजोडायजापाइन) यह दवा नींद के लिये, मिर्गी के लिये तनाव चिन्ता के लिये प्रयोग की जाती है। वे गर्भवती महिला जो नियमित डायजेपाम लेती है। उन्हें फलोपी इन्फेन्ट सिन्ड्रीम तकलीफ का सामना करना पड़ता है जन्म लिये बच्चे कमजोर, तपमान सामान्य से कम व इनके दिमाग पर दवा का असर रहता है। यह बच्चा पैदा होने से इक्कीस दिन का होने तक होता है। कई बार महिनों तक बच्चा डायजोपाम पर निर्भर

रह सकता है।

महिलाओं का दायित्व

कदाचित उपर्युक्त प्रकार की किसी स्थिति में गर्भस्थिति हो जाए और इलाज चलते रहना अनिवार्य हो एवं भ्रूण के प्रति गंभीर हानिकारक संभावना बलवती हो तब ऐसी परिस्थिति में चिकित्सक द्वारा गर्भ समापन की आवश्यकता के बारे में विचार करना होगा। धुम्रपान और मदिरा के प्रयोग को हानिकारक संभावनाओं से भी सभी प्रजननशील महिलाओं को अवगत कराने की जरूरत है।

गर्भावस्था में हर छोटे-मोटे लक्षण के लिए तरह-तरह की अनावश्यक दवाएं इस्तेमाल नहीं करनी चाहिए रहन-सहन आहार विहार कामकाज का ढंग और व्यायाम विश्राम, दिनचर्या ऐसी बनाएं कि सामान्य स्वास्थ्य स्वतः ठीक रहे दवाएं इस्तेमाल करने की नौब ही न बने मनः स्थिति पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है दवाओं का प्रयोग तभी करना चाहिए जब अनिवार्य प्रतीत हो वह कम से कम दवाएं न्यूनतम अवधि के लिए गर्भावस्था में खुदबखुद अथवा पड़ोसी की सलाह पर न ले। जानकार चिकित्सक का परामर्श अनिवार्य है।

अपने चिकित्सक का चयन भी ठीक से करे प्रशिक्षित विशेष आब्सट्रेटीशन और फिजीशियन से आवश्यकतानुसार परामर्श करें। अगर अपने किसी कोई चिकित्सक लापरवाही से अथवा जल्दबाजी में जानकारी लेते समय महिला की वर्तमान गर्भस्थिति आदि के बारे में जानकारी न प्राप्त करे तो उसे स्वयं यह बात बताने में संकोच न करे स्पष्ट रूप से यह भी पूछ ले कि दवाएं दी गई है वे इस त्रुटि से निरापद तो है कोई भी उत्तरदायी और शुभचितंक चिकित्सक इस बात का बुरा नहीं मानेगा बल्कि आप की बात उसे अपनी भूल सुधारने का अवसर देगी। दवा निर्माताओं के भी दायित्व है सभी दवाओं के पैकिंग में उन संभावनाओं के समुचित जानकारी अनिवार्यतः बनी चाहिए चिकित्सकों को भी पृथक से जानकारी दी जानी चाहिए।

सम्पादक के नाम पत्र

- चतुर्वेदी महासभा की कार्य कार्यकारिणी की बैठक के सफल आयोजन एवं उत्कृष्ट मेजबानी के लिए हम माथुर चतुर्वेदी समुदाय मुंबई का दिल से धन्यवाद करते हैं। आपकी योजना,सहयोग और समर्पण ने इस बैठक को अत्यंत सफल और यादगार बनाया। आप सभी का योगदान वास्तव में सराहनीय है ।

-भूषण चतुर्वेदी, गाजियाबाद

- आभार हृदय की गहरायों से सभी का तथा विशेष रूप उस आगामी पीढ़ी जिसने सारी योजना बनाई और उस को उर ने भव्य रूप से क्रियान्वित किया

स्थानीय बांधव सम्मान कार्यक्रम तथा चयन उत्तम। पुनः आभार सभी आयोजकों का - विशेष रूप से विनोद जी, पंकज जी , मधुपम जी, निमिषा जी, आश्री जी और अम्बुज जी का

-मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी,नोयडा

- Very well organised by Mumbai shakha sabha team, keep it up. Thank u so much Pankaj ji.

- विनीता चतुर्वेदी, देहरादून

- बहुत बहुत बधाई, मुंबई समुदाय को, इतना बड़ा आयोजन बहुत ही सराहनीय है। शनिवार शाम आदरणीय विनोद जी के घर पर चाय के बाद जुहू पर घूमने का आनंद लिया तथा इस्कॉन मंदिर का भ्रमण बहुत ही आनंदई रहा। इसके बाद मीटिंग की सुचारू व्यवस्था के सभी मुंबई समुदाय के सदस्यों का बहुत बहुत धन्यवाद। पंकज जी, पीयूष जी, मधुपम जी एवं सभी को बहुत बहुत बधाई,

-प्रदीप चतुर्वेदी (संजू), साहिबाबाद

दिनाँक 11जनवरी 2026, विले पार्ले इंटरनेशनल होटल मुंबई जहां अखिल भारतीय माथुर चतुर्वेदी महासभा की कार्यकारिणी मीटिंग का आयोजन किया गया। यह आयोजन इतना सफल व भव्य था कि इसकी तारीफ करने के लिए शब्द नहीं है। इस सब के पीछे मुंबई शाखा सभा के सक्रिय सदस्य बहुत-बहुत धन्यवाद के पात्र हैं । 10 जनवरी की शाम हाईटी और स्नैक्स के साथ शुरू होकर बस द्वारा जुहू बीच, मरीन ड्राइव, इस्कॉन मंदिर आदि का भ्रमण करते हुए यह यात्रा श्री विनोद जी के यहां संपन्न हुई। जहां सुश्री आश्री ने सुरुचि पूर्ण भोजन का बहुत ही शानदार प्रबंध किया। अगले दिन मीटिंग का शुभारंभ श्री गणेश वंदना श्रीमती दीप्ति द्वारा किया गया। मीटिंग जो हमारी लोकप्रिय अध्यक्षा श्रीमती उषा चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में थी,उसमें कई प्रबुद्ध जनों द्वारा ओजस्वी विचारों को व्यक्त किया गया। पूरी मीटिंग में प्रारंभ से अंत तक जो सबसे ज्यादा धन्यवाद के पात्र हैं उनमें श्रीमती निमिषा जी ,श्री पंकज जी ,श्री अंबुज जी ,श्री पीयूष जी व श्री महेंद्र जी हैं जिनकी मेहनत से इस आयोजन में चार चांद लग गए।

दो लाइन तो बनती ही हैं - कैसे धन्यवाद करें आपका शब्द नहीं मिलते, कार्यकारिणी की मीटिंग इतनी खूबसूरत ना होती यदि आप जैसे व्यक्तित्व ना होते।

-श्रीमती क्षमा चतुर्वेदी, मुरैना

पपीता: एक प्राकृतिक वरदान

- डॉ मनोज चतुर्वेदी, लखनऊ

पपीता एक ऐसा फल है जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ अनेक रोगों का इलाज भी करता है। आयुर्वेद में इसे औषधीय गुणों से भरपूर माना गया है। चाहे बात हो पाचन सुधारने की, दृष्टि शक्ति बढ़ाने की या फिर बवासीर जैसी समस्याओं में पपीता लाभकारी है।

पपीते के अद्भुत फायदे : पाचन शक्ति को बनाए दुरुस्त

पपीते में मौजूद पेप्सिन और अन्य पाचक एंजाइम्स पाचन क्रिया को सुधारते हैं।

कब्ज, गैस और अजीर्ण की शिकायत में लाभकारी

पेट की सूजन और अपेंडिक्स में राहत

आंतों की सफाई और रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करता है।

आंखों की रोशनी बढ़ाए

पपीते में भरपूर मात्रा में विटामिन A होता है, जो नेत्रज्योति को बढ़ाता है और रतौंधी जैसी समस्याओं से बचाता है।

बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास में सहायक

बच्चों की लंबाई बढ़ाने में सहायक

स्मरण शक्ति और बुद्धि विकास के लिए लाभकारी

शरीर को बलवान और रोगमुक्त बनाता है।

दूध पिलाने वाली माताओं के लिए लाभकारी

पपीता दूध की मात्रा बढ़ाता है,

मां और शिशु दोनों के स्वास्थ्य के लिए हितकारी है।

बवासीर में रामबाण

सुबह खाली पेट पपीता खाने से मल साफ आता है,

आंतों में राहत और सूजन में कमी एवं

पेट के कीड़े खत्म करता है ।10 ग्राम कच्चे पपीते का रस सुबह लेने से पेट के कीड़े नष्ट होते हैं।

बच्चों में कृमि की समस्या के लिए विशेष लाभदायक है।

पपीता और शहद स्वास्थ्य का डबल डोज

पपीता यदि शहद के साथ खाया जाए तो शरीर को अतिरिक्त पोषण मिलता है। विटामिन A, B, C की कमी दूर होती है

पोटेशियम संतुलन बनाए रखता है,

रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है

पका हुआ पपीता लें और उस पर निम्न डालें:--

सेंधा नमक,नींबू का रस,भुना जीरा

इसे रोज़ाना सुबह या शाम को भोजन के बाद खाएं।

** नोट:---

– गर्भवती महिलाएं बिना डॉक्टर की सलाह के पपीता ना लें।

-मधुमेह रोगी शहद का उपयोग सीमित मात्रा में करें।

आज से ही पपीते को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं और स्वस्थ जीवन की ओर कदम बढ़ाएं।

स्वास्थ्य बीमा -- संभल कर??

- तन्मय चतुर्वेदी, (मैनपुरी/पलवल)

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में शोधकार्य से हार्ट, किडनी, लीवर, आर्थोपेडिक या कैंसर, एड्स जैसी गंभीर बीमारियों का भी निदान संभव हो गया है, लेकिन एडवांस्ड साइंटिफिक टेक्नोलॉजी एंड डायग्नोस्टिक्स आधारित ट्रीटमेंट दिन प्रतिदिन महंगा होता जा रहा है, जिसके कारण स्वास्थ्य बीमा योजना का प्रचार एवं प्रसार बढ़ता जा रहा है।हम हेल्थ इंश्योरेंस लेकर निश्चिंत हो जाते हैं कि अब तो बीमा कंपनी मुसीबत में सहभागिता करेंगी, लेकिन ऐसा नहीं होता है। IRDAI के आंकड़ों के अनुसार वित्त वर्ष 2023-24 में बीमा कंपनियों ने 11% पॉलिसी क्लेम को सिरे से ही खारिज कर दिए।

क्लेम रिजेक्ट होने के प्रमुख कारण होते हैं

1. **वेटिंग पीरियड** -- लोंग पांलिसी लेते ही क्लेम करने लगते हैं, लेकिन शुरुआती 30 दिन का लांक इन पीरियड के साथ ही कुछ बीमारियों के लिए 3 से 4 साल का इंतजार करना होता है, इसके कारण सबसे ज्यादा 25% क्लेम रिजेक्ट होते हैं।
2. **ओ.पी.डी. का चक्कर** -- अस्पताल में दिखाने या भर्ती होने के आधार पर पांलिसी के दायरे से बाहर होने के कारण 25% क्लेम खारिज हुए।
3. **समय पर जबाब नहीं दिया** -- क्लेम देखकर कंपनी प्रायः कुछ सवाल पूछती है, लेकिन पांलिसी धारक निर्धारित समय पर उतर नहीं देते, इस लैक आफ रिस्पांस आधार पर 18% क्लेम खारिज हुए।
4. **गैर जरुरी भर्ती** -- यदि डॉक्टर ने केवल आब्जर्वेशन के लिए भर्ती किया बल्कि उपचार घर पर ही संभव था, 16% ऐसे मामलों में रिजेक्शन हुआ।
5. **फैक्ट छुपाना** -- यदि पांलिसी लेते समय पुरानी बीमारियों को छुपाया तो 12% क्लेम खारिज हुए। अतएव हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी लेते समय कुछ सावधानियां आवश्यक है ----

1. **डिस्चार्ज समरी**--- अस्पताल से डिस्चार्ज होने पर डाक्टर के नोट्स,प्रीक्रीपेशन, दवाई के बिल, जांच के बिल एडवाइजरी के साथ 30 दिनों के अंदर ही क्लेम अवश्य जमा करें।
2. **प्रीआंथराइजेशन**-- हमेशा कैशलेश पालिसी में प्रीआंथराईजेशन करवाएं, जिससे अस्पताल में भर्ती से पहले ही पता चल जाएगा कि कंपनी कितना खर्चा देगी।
3. **रुम रैंट कैपिंग** -- अधिकांश कंपनियां रुम रैंट की सीमा सम एश्योर्ड का 1% होती है, यदि अधिक मूल्य का कमरा हुआ तो कंपनी उसी अनुपात में डाक्टर फीस, सर्जरी एवं नर्सिंग चार्ज भी काट सकती हैं।
4. **कंज्यूमेबल्स**-- ग्लब्स,मास्क,पीपीई किट, सिरिंज आदि चीजों को कंपनियां नान मेडिकल मानती है, प्रायः कंपनियां इनके खर्चे नहीं देती है, इसके लिए आप कंज्यूमर राइडर्स लें।
5. **को पेमेंट** -- सभी कागजात ठीक से पढ़े,हो सकता है कि पांलिसी पेपर में छोटे शब्दों में 10या20% को पे लिखा हो अर्थात बिल जितना भी होगा,उसका 10-20% आपको देना होगा। सीनियर सिटीजंस केस में अधिक भी हो सकता है।
6. **सब लिमिट** -- आपने 10 लाख का हेल्थ इंश्योरेंस लिया हो, लेकिन पांलिसी में बीमारियों के लिए निर्धारित राशि ही मिलेगी, जैसे मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए रु 30000/ ही हों।
7. **प्री-आफ्टर हांस्पिटलाइजेशन** -- अस्पताल में भर्ती होने से पहले की जांच-पड़ताल और डिस्चार्ज के बाद की दवाइयां के बिल सदैव सम्हाल कर रखें। आमतौर पर 60 दिन पहले और 90 दिन बाद का खर्चा मिलता है, इसके लिए हर पर्चा और ओरिजनल बिल जरुरी होते हैं।

बीमारियों की बढ़ती रेंज एवं महंगा होता इलाज के कारण हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी पांलिसी की आवश्यकता बढ़ती जा रही है तो प्रमुख सावधानियां ध्यान में रखते हुए ही पांलिसी का चयन करें -

* हेल्थ पालिसी का हर दो-तीन साल में रिव्यू करले।
* ऐसी पालिसी चुनें जिसमें नो रुम रेंट कैप,रीस्टोरेशन बेनेफिट और डिजिटल क्लेम प्रोसेस हो।
* हमेशा कैशलेश प्रीआंथराईजेशन ले, इसके लिए नजदीकी नेटवर्क अस्पताल में प्लान करें।
* सस्ती सुपर टाप अप पालिसी से अपना सम एश्योर्ड बढ़ाए, जिससे गंभीर वीमारी भी कवर होगी।
* सम एश्योर्ड अमाउंट मेडिकल इंफ्लेशन के अनुसार बढ़ाते रहें।

तितिक्षा मय जीवन कैसे जीयें??

- कनक चतुर्वेदी, कोलकाता

तितिक्षा को जीवन में उतारना एक रातों-रात होने वाली घटना नहीं है, बल्कि यह मांसपेशियों (muscles) को बनाने जैसा है। जैसे हम धीरे-धीरे वजन उठाकर शरीर को मजबूत करते हैं, वैसे ही छोटे-छोटे अभ्यासों से मन को 'तितिक्षु' बनाया जाता है!! तितिक्षा मय जीवन अर्थात परिस्थिति मत बदलो (यदि संभव नहीं है) मनःस्थिति बदलों!!

दैनिक जीवन में तितिक्षा का अभ्यास करने के लिए आप इन ५ व्यावहारिक चरणों (Practical Steps) का पालन कर सकते हैंः

1. **छोटी शारीरिक असुविधाओं से शुरुआत करें (Physical Discomforts) सबसे पहले शरीर के स्तर पर द्वंद्वों (सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास) को सहना सीखें।**

* **मौसम का प्रभावः** यदि थोड़ी गर्मी लगे, तो तुरंत AC या पंखा चलाने के लिए न दौड़ें। कुछ देर उसे स्वीकार करें। यदि सर्दी लगे, तो तुरंत हीटर के पास न भागें। शरीर को उस तापमान के साथ सामंजस्य बिठाने का मौका दें।
* **भूख और प्यासः** यदि भूख लगी है और भोजन मिलने में १०-१५ मिनट की देरी है, तो चिड़चिड़े न हों। उस भूख को शांति से देखें और खुद से कहें, मैं शरीर नहीं हूँ, यह भूख शरीर को लगी है, मैं इसे देख सकता हूँ।
* **आसनः** दिन में कुछ समय (भले ही १५ मिनट) बिना हिले-डुले एक ही आसन में बैठने का प्रयास करें। शरीर में खुजली या अकड़न हो, तो तुरंत प्रतिक्रिया न दें, उसे केवल देखें।

2. **'प्रतिक्रिया' (Reaction) पर रोक लगाएं - सबसे कठिन अभ्यास**

तितिक्षा का असली अर्थ है— अप्रतीकारपूर्वकम्‌ (बिना बदला लेने की भावना के)।

* **अपमान या आलोचनाः** अगर कोई आपकी आलोचना करे या कटु शब्द कहे, तो पुरानी आदत के अनुसार तुरंत पलटकर जवाब न दें। एक गहरा 'पॉज' (Pause) लें।
* **ट्रैफिक और कतारेंः** जब आप ट्रैफिक में फंसे हों या लंबी लाइन में हों, तो हॉर्न बजाने या मन ही मन कोसने के बजाय, उस समय को स्वीकार करें। यह अभ्यास आपके धैर्य (Patience) को बहुत बढ़ा देगा।

3. **वाणी का संयमः 'शिकायत-मुक्त' जीवन (No Complaints)**

शंकराचार्य ने कहा है— चिन्ताविलापरहितं (बिना रोए-धोए सहना)।

* अक्सर हम कष्ट तो सह लेते हैं, लेकिन दस लोगों से उसका रोना रोते हैं— आज बहुत गर्मी है, मेरा सिर दर्द कर रहा है, वह आदमी बहुत बुरा है।
* **अभ्यासः** संकल्प लें कि आप दिन में कम से कम ३ घंटे अपनी किसी भी शारीरिक या मानसिक तकलीफ की शिकायत (Complaint) किसी से नहीं करेंगे। तकलीफ है, उसे जानें, दवा लें, लेकिन उसका 'विलाप' न करें।

4. **साक्षी भाव (Witness Attitude) विकसित करें**

तितिक्षा दमन (Suppression) नहीं है। आपको अपने गुस्से या दर्द को जबरदस्ती दबाना नहीं है, बल्कि उससे खुद को अलग करना है।

* **जब दर्द हो, तो सोचेंः** यह दर्द मेरे शरीर को हो रहा है, मुझे नहीं। मैं इसका ज्ञाता (Knower) हूँ।
* यह भाव आपको पीड़ा के मानसिक प्रभाव से बचा लेता है। शारीरिक कष्ट तो रहेगा, लेकिन मानसिक संताप (Suffering) खत्म हो जाएगा।

5. **यह सोचेंः यह मेरे तप के लिए है**

हर मुश्किल परिस्थिति को एक 'अवसर' मानें।

* जब भी कोई कष्ट आए, तो सोचें कि यह परिस्थिति ईश्वर ने मेरी तितिक्षा की परीक्षा लेने के लिए भेजी है।
* इस दृष्टिकोण से कष्ट, कष्ट नहीं लगता बल्कि एक 'चुनौती' (Challenge) बन जाता है जिसे आपको जीतकर निकलना है।

क्या आप आज से एक छोटा सा प्रयोग (Experiment) करना चाहेंगे?

आप अगले २४ घंटों के लिए एक बहुत ही सरल 'तितिक्षा चुनौती को स्वीकार कर सकते हैं।

अगले २४ घंटों के लिए आपके लिए यह लघु तितिक्षा प्रयोग (Mini Titiksha Experiment) है। इसे हम 'शून्य शिकायत दिवस' (Zero Complaint Day) कहेंगे।

इसमें आपको ३ नियमों का पालन कड़ाई से करना हैः

1. **वाणी की तितिक्षा (Speech Constraint)**

अगले २४ घंटे तक आप किसी भी बाहरी परिस्थिति के बारे में मुंह से शिकायत नहीं करेंगे।

* **उदाहरणः** आज ठंड बहुत है, चाय फीकी है, इंटरनेट धीमा चल रहा है, उसने मुझे कॉल नहीं किया, ट्रैफिक बहुत खराब है।
* **नियमः** ये विचार मन में आएंगे, उन्हें आने दें, लेकिन जुबान पर नहीं लाना है। उसे अंदर ही अंदर 'पी' जाना है।

2. शरीर की तितिक्षा (The 5-Minute Rule)

जब भी शरीर को कोई छोटी-मोटी असुविधा (Discomfort) हो, तो उसे ठीक करने में ५ मिनट की देरी करें।

* **उदाहरणः** अगर पीठ में हल्की खुजली हो, पैर हिलाने का मन करे, प्यास लगे (बहुत तेज नहीं), या रजाई ठीक करने का मन हो।
* **नियमः** तुरंत प्रतिक्रिया न करें। घड़ी देखें और खुद से कहें— मैं इसे ५ मिनट तक ऐसे ही देखूंगा, फिर ठीक करूंगा। उस ५ मिनट की बेचैनी को सिर्फ देखें (Witness it)।

3. मन की तितिक्षा (No Mental Argue)

अगर कोई व्यक्ति आपकी बात न माने, या कोई ऐसी बात कहे जो आपको पसंद न हो, तो मन में उसे जवाब न दें।

* हम अक्सर सामने वाले को चुप करा देते हैं, पर मन ही मन उससे लड़ते रहते हैं।
* नियमः जैसे ही मन में बहस शुरू हो, तुरंत 'स्टॉप' बोलें और ध्यान दूसरी तरफ लगा दें।

सावधानी!! (Disclaimer)

कृपया ध्यान दें: यह अभ्यास केवल छोटी-मोटी असुविधाओं के लिए है। यदि शरीर में कोई गंभीर कष्ट हो, बीमारी हो, या सुरक्षा का मामला हो, तो वहां तितिक्षा न करें, तुरंत आवश्यक कदम उठाएं।

जरा मुस्कराइए

- **मुकेश चतुर्वेदी**, कोलकाता

विवाह की बात हमेशा हिंदी में ही करना चाहिए...!!
अंग्रेजी से जरा बच के रहे...!!

1) लड़की वाले : बेटा क्या करते हो .??

** लड़का : I am Timber Merchant at Connaught Place Delhi Panchkuia Road !!
** लड़की वालेः बेटा वाह!!
** शादी के बाद पता चला वो लड़का दातून बेचता है.!!
ससुर जी कोमा में चले गए .!!

2) लड़की वाले : बेटा क्या करते हो...??

** लड़का : I am Air diffusion fix and monitoring scientist !!
लड़की वाले : बेटा वाह !!
** शादी के बाद पता चला वो लड़का पंचर बनाता है.!!
ससुर जी तीसरी मंजिल से 3 बार कूदने की कोशिश कर चुके हैं...!!

3) लड़की वाले : बेटा क्या करते हो...??

** लड़का I am chif executive in cleen india initiative and permanent member of स्वच्छ भारत अभियान...!!
लड़की वाले : बेटा वाह !!
** शादी के बाद पता चला लड़का इधर ही दो गली छोड़ के स्वीपर का काम करता है...!!
ससुर जी को आगरा ले जाने का प्रबंध किया गया है...!!

4) लड़की वाले : बेटा क्या करते हो...??

** लड़का : I run a start up product line includes organic mouth refreshner !!
लड़की वाले : बेटा वाह !!
** शादी के बाद पता चला नुक्कड़ पे पान की दुकान है !!
ससुरजी के प्राण पखेरू उड़ते उड़ते बचे!!

5) लड़की वाले : बेटा क्या करते हो ??

** लड़का : l am Metallurgical amalgamation engineer
** शादी के बाद पता चला लड़का वेल्डर है!!
ससुर जी चारों खाने चित्त हो गए!!

6) लड़की वाले : बेटा क्या करते हो ??

** लड़का : l am senior security and house keeping officer
लड़की वाले : बेटा वाह !!
** शादी के बाद पता चला लड़का बिल्डिंग का चौकीदार है!!
ससुर जी गिर पड़े, फिर उठे नहीं!!

अहम रिश्ता

- प्रेम चतुर्वेदी, नोएडा

जब तनूजा दिल्ली पहुंची तो एअरपोर्ट पर शरद चाचा लेने आए थे, जैसे ही तनूजा ने उन्हें देखा, उसका दिल भर आया, कभी नहीं सोचा था कि एक दिन शरद इतना अपना हो जायगा!

वह पांच साल की थी, जब यह लम्बा चौड़ा शरद पहली बार उनके घर आया था, उम्र होगी यही कोई इक्कीस- बाइस साल, शर्माता सा आंगन में पापा के सामने खड़ा था !

पापा मम्मी से कह रहे थे, यह हमारे गांव के प्रधान रामलाल जी का बेटा है, दसवीं पास है, यहां हमारी फैक्ट्री में नौकरी करेगा, इसके लिए पीछे वाली कोठरी खुलवा दो, और यह खाना कुछ दिन हमारे साथ खाएगा, धीरे धीरे अपना खाना बनाना सीख जायगा!!

मम्मी शरद को देखकर मुस्करा दी, चल पहले खाना खा ले, फिर कोठरी खोल देंगे !

वो वहीँ वरांडे में सकुचाता सा पटरी बिछा कर बैठ गया। मम्मी ने उसके सामने खाने की थाली रख दी, एकबार खाने लगा तो सकुचाना भूल गया, इतनी रोटी खा गया कि उसके जाने के बाद मम्मी ने कहा, पूरा बकासुर है!

पर वो बकासुर इतनी जल्दी घुलमिल गया कि, जब जिसको जैसी जरूरत होती, वो उसी रूप में ढल जाता, तनूजा के साथ वो लूडो खेलता, उसको साइकिल की सैर कराता, घर में मेहमान आ जाते तो ट्रे उठाकर इधर उधर भागता, पापा ऑफिस से आ जाते तो उनके पीछे ट्रक पर सामान लदवाता, बैंक के काम करता, पापा की गाड़ी चलाता, वो बस हरफनमौला था!

फिर एक दिन कारगिल की जंग छिड़ गई, और पापा ने बताया शरद सेना में भर्ती हो गया है!! कुछ ही दिन में सब शरद को भूल गए, सब अपनी ज़िंदगी के पुराने ढर्रे पर लौट गए!

छः महीने बीत गए थे जब से वो गया था, एक दिन तनूजा शाम के वक़्त गली में खेल रही थी कि उसने दूर से पापा को किसी फौजी के साथ आते देखा, ध्यान से देखा तो शरद था,अरे शरद तूँ ! तनूजा ने आश्चर्यचकित होते हुए कहा। शरद शर्माकर मुस्करा दिया...!! शरद सोफे पर बैठा पापा के साथ चाय पी रहा था, तनूजा ने पास आकर कहा, शरद तू तो बिलकुल बदल गया है!

शरद नहीं,शरद चाचा, वो देश की रक्षा के लिए अपनी जान पर खेल कर आया है। पापा ने शरद के कंधे थपथपाते हुए कहा!

जी पापा, और तनूजा ने बड़े आदर के साथ सलूट ठोक दिया, पापा हँस दिए और शरद ने मुस्कराकर उसका सिर थपथपा दिया!

शरद जाने लगा तो मम्मी ने उसे एक पैकेट थमा दिया,ये तुम्हारी बहुरिया के लिए है। शरद ने आदरपूर्वक ले लिया!

साल दर साल बीतते रहे, शरद फिर कभी नहीं आया, उसकी चिठ्ठी जरूर पापा के पास नियम से आ जाती, जिसमें उसकी जिंदगी में क्या हो रहा है, उसका पूरा ब्यौरा होता, पापा को अब वह साहब की जगह बाबूजी लिखता था, मम्मी को माँ जी, और तनूजा के लिए दीदी लिखता था!

तनूजा की शादी हो गई और वह अमेरिका चली गई। मम्मी और पापा एकदम अकेले पड़ गए, तनूजा को अपराध बोध सताने लगा ! इतने में कोविड आ गया और दुनिया जहां थी वहीं ठहर गई, तनूजा दिन रात अपने मम्मी पापा के स्वास्थ्य के लिए डरने लगी, और फिर एक दिन वीडियो कॉल पर देखा उनके साथ शरद बैठा है, तनूजा ने राहत की साँस ली, उसे लगा अब सब ठीक है...!! शरद ने कहा घबराओ मत दीदी, मैंने प्रीमैच्योर रिटायरमेंट ले ली है, और जब तक सब सामान्य नहीं हो जाता मैं यहाँ रहूँगा!

और तुम्हारा परिवार ? तनूजा ने पूछा ?

वे सब गाँव में हैं, ठीक हैं!

तनूजा ने देखा कुछ ही दिनों में उसके माँ बाप स्वस्थ लगने लगे हैं, उनसे जब भी बात करो, उनकी हर बात में शरद का जिक्र होता, यहां तक कि तनूजा को कभी कभी थोड़ी जलन सी हो जाती!

कोविड से मरने वालों की संख्या रोज़ बढ़ रही थी, और फिर माँ और पापा भी बारी बारी से उसकी चपेट में आ गए। शरद दिन रात उनकी सेवा कर रहा था, ज़ूम पर उनसे बात करा देता, लग रहा था,सब ठीक हो जायगा, फिर एक दिन मम्मी नींद में ही चल बसीं। तनूजा ने ज़ूम पर शरद को माँ के सारे संस्कार करते हुए देखा। पापा कोविड से निकल आये थे, परन्तु दो महीनों बाद उन्हें ब्रेन हेम्रेज की वजह से पैरालिसिस हो गया, और उन्हें अस्पताल में रखना पड़ा, शरद ने बेटे से बढ़ कर सेवा की, परन्तु पापा को बचा नहीं पाया, तनूजा ने एकबार फिर से शरद को पुत्र का फ़र्ज़ निभाते देखा!

आज वो उनकी मृत्यु के बाद पहली बार भारत लौट पाई है!

टैक्सी में बैठते ही शरद ने कहा, आपका बंगला साफ़ करवा दिया है, मेरी पत्नी रात को रहने के लिए आपके पास आ जायगी!

और तुम ?...

मैंने एक छोटा सा फ्लैट यहीं शहर में ही ले लिया है, बाबू जी ने मदद करी थी ख़रीदने में! तनूजा ने मन में सोचा, चलो कुछ तो अहसान उतरा, और तुम्हारे बच्चे?

एक बेटा है, आर्मी के मेडिकल कॉलेज में पूना में पढ़ता है!

घर के सामने टैक्सी रुकी तो, तनूजा का मन भर आया, अपनी नम आँखों से उसने कहा, शरद चाचा जो आपने हमारे लिये किया है, उसका अहसान मैं कभी नहीं चुका सकूँगी, फिर भी कभी तुम्हारे लिए कुछ कर सकूँ तो ज़रूर बताना!

कैसी बातें करती हैं आप ! उसने पुराने दिनों की तरह शर्माकर कहा! इस तरह पुराने शरद की झलक पा, तनूजा का मन खिल उठा, एक पल के लिए उसकी इच्छा हुई वह इस आदमी से लिपटकर जी भर कर रोये! वो भीतर आये तो एक लड़का उनके पीछे पीछे बड़ा सा टिफ़नि लेकर आ गया!

ये कौन है ?

मेरा बेटा है, अजय

और अजय ने आगे बढ़कर पैर छू लिए!

छुट्टी में घर आया हुआ है, खाना लाया है घर से, हमने सोचा, अभी वीमारी गई नहीं है पूरी तरह से, आप बाहर का न खायें तो बेहतर होगा!

शरद के इस अपनेपन से तनूजा का मन फिर भीगने लगा! आप चाय पियेंगी न? अजय किचन से दो कप चाय ले आया, मैं कल यहाँ सारा सामान रख गया था। उसने चाय थमाते हुए कहा!

देर शाम तक शरद सारा हिसाब समझाता रहा, घर के काग़ज़, प्लांट के काग़ज़, फिक्स्ड डिपाजिट, लाकर की चाबियाँ, गहने, और भी न जाने क्या क्या?

मैं कल आऊँगा, आज आराम कर लो, कल से काम शुरू करेंगे, फिर एक दिन पूजा भी रखेंगे, आपके सब रिश्तेदारों को बुलाकर, ब्राह्मण भोज भी करना है। शरद ने कहा! शरद चला गया तो वो घर का एक-एक कोना सूँघने लगी, अजीब सुकून मिल रहा था, उसे सिर्फ़ इस घर में साँस लेने मात्र से!

उसके पति समीर का अमेरिका से फ़ोन आया तो जैसे वो तंद्रा से जाग गई।

हलों, सब ठीक है न? दूसरी तरफ़ से आवाज़ आई।

हाँ, सब ठीक है। तनूजा ने अनमने भाव से कहा।

शरद ने सब हिसाब दे दिया ठीक से ? समीर ने पूछा ....!!

हाँ कहते हुए तनूजा का गला रूँध गया।

तुम होटल में क्यों नहीं शिफ़्ट हो जाती ? समीर ने कहा !

सुनकर उसका मन हुआ वो फ़ोन पटक दे, पर सँभल कर बोली !

सब ठीक है, शरद चाचा ने सारा इंतज़ाम कर दिया है। तनूजा ने अपने स्वर की नमी छुपाने का प्रयत्न करते हुए कहा !

उन लोगों से सँभल कर रहना, वह इतनी तकलीफ़ क्यों उठा रहा है? तनूजा ने कोई जवाब नहीं दिया तो फिर बोला, पापा उसको कुछ देकर गए हैं क्या ?

तनूजा के लिए अब यह बर्दाश्त से बाहर हो रहा था, उसने विषय बदल दिया, और किसी तरह बातचीत को समाप्त किया !

रात को शरद की पत्नी मंजू आ गई, आते ही ऐसे गले लगाया जैसे जन्म से कोई आत्मीय हो । देर रात तक बकबक करती रही, फिर यह फ़ैसला भी सुना दिया कि जब तक तनूजा भारत में है, वो घर नहीं जायगी, यहीं रहकर उसका ध्यान रखेगी !

अजय भी तो छुट्टी पर आया है, उसका ध्यान कौन रखेगा ?.

वो अपने पापा के साथ है, यहाँ इतने बड़े घर में आप अकेले हो! शरद दिन रात भागदौड़ करके सारे काम निपटाता रहा, हर जगह तनूजा के साथ जाता,धूप होती तो उसके लिए छाया की तलाश करने लगता, खड़ी होती तो कहीं से कुर्सी ढूँढ लाता, पानी की बोतल, खाने का सामान, दो ही दिन में तनूजा को लगने लगा, जैसे कोई महारानी हो-- अपने चाचा के कंधे पर सवार !!

हवन हो चुका था, सारे रिश्तेदार अपनी-अपनी सहानुभूति देकर जा चुके थे, बस, अब कल वापिस जाना था, तनूजा अपने विचारों में लीन गुमसुम बैठी थी, कि शरद ने कहा,

ये लीजिये दीदी....!!

यह क्या है ?

बेसन के लड्डु, समीर जी के लिये, माँ जी ने बताया था कि दामादजी को बहुत पसंद हैं ।

और मेरे लिए ? उसने नम आँखों से मुस्कुराकर पूछा ।

शरद की आँखें नम हो आई, आपके लिए तो बस हमारा आशीर्वाद है ।

सुनकर तनूजा खड़ी हो गई और उसने शरद के पैर छू लिए,

छी यह क्या कर रही हो, बेटियाँ पैर नहीं छूती ।

शरद ने उसे गले लगा लिया, और तनूजा उस दिन पहली बार मम्मी पापा की याद में खुलकर रोई....!!

टैक्सी आ गई थी, तनूजा ने घर की चाबी मंजू को पकड़ाते हुए कहा, चाची, ये लो अपने घर की चाबियाँ, तुम हो तो मेरा मायका है !

नहीं दीदी, घर इस बार नहीं तो अगली बार बिक जायगा, इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी हम नहीं ले सकते । शरद ने कहा...!!

तो शरद चाचा, अब मेरी ज़िम्मेवारी है ? ये हैं फ़ैक्टरी के काग़ज़, अब यह तुम्हारी हुई, इतनी जल्दी रिटायर होने से काम नहीं चलेगा !

शरद ने कहा, फ़ैक्टरी हम चला देंगे, परंतु अपनी तनख़्वाह से ज़्यादा कुछ नहीं लेंगे !

चाचा,अब आप ही मालिक है, चाहें जो करें!!

तनूजा ने मुस्कुराकर कहा !

हवाई जहाज़ में वो खिड़की से बाहर झाँक रही थी, देश छूट रहा था,और वह सोच रही थी, माँ बाप भी बच्चों के लिए कैसे-कैसे रिश्ते विरासत में छोड़ जाते हैं ? शरद को दिया उनका स्नेह, कैसे कई गुणा बढ़कर उसके पास लौट आया है!!

आधी दुनिया

कैलेण्डर कहानी

- विभा अतुल, लखनऊ

आज रोमन वर्ष कैलेण्डर सर्वाधिक लोकप्रिय है,चाहे हिन्दू पंचांग हो या इस्लामिक हिजरी कैलेंडर, लेकिन सभी का आधार वर्ष रोमन वर्ष कैलेण्डर ही होता है। मान्यता है कि रोम के संस्थापक रोमुलस ने लगभग 738 ईसा पूर्व 10 महीने वाले कैलेण्डर शुरू किया, जिसमें वर्ष का पहला महीना मार्च था। इसके 38 वर्ष बाद रोम के दूसरे राजा नुमा पोपिलियस के समय 12 महीने वाला कैलेण्डर शुरू किया गया।बारह महीनों की कहानी इस तरह है ----

1. **जनवरी** -- रोमन देवता दो मुखी जेनस के नाम से जाना जाता है, जो भूतकाल से भविष्य तक देखते है,इसी कारण जनवरी को नववर्ष की शुरुआत माना जाता है।
2. **फरवरी**-- फरवरी को फैबुआलिया नामक एक रोमन शुद्धिकरण उत्सव से जुड़ा है,जिसे आत्मशुद्धि एवं पवित्रता से संबंधित माना जाता है।
3. **मार्च**-- रोमन युद्ध देवता मार्स के नाम पर पड़ा, प्रायः युद्ध अभियान मार्च से होती थी।
4. **अप्रैल**-- इस महीने का नाम लैटिन शब्द पपेरिरे,जिसका अर्थ 'खुलना' है। कुछ इतिहासकार इसे प्रेम देवी वीनस से जोड़ कर फूलों के खिलने का प्रतीक बताया है।5.मई--इसका नाम रोमन उर्वरता देवी माइया से जुड़ा है, प्रकृति की उर्वरता एवं जीवन के विस्तार का संकेत है।
6. **जून**-- इसका नाम रोमन देवी जूनो से लिया गया है,जो विवाह, महिलाओं एवं मातृत्व की संरक्षक हैं।
7. **जुलाई**-- इसका नाम रोमन सम्राट जूलियस से लिया गया है।
8. **अगस्त**-- इसे रोमन सम्राट आंगस्टस के नाम पर अगस्त रखा गया।
9. **सितंबर से दिसंबर** -- सितंबर, अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर का नाम सबसे पुराने कैलेण्डर के अनुसार - सेप्टेम(सात),आंक्टो (आठ),नोवेम (नौ) और डेसम (दस) से लिया गया है हालांकि आधुनिक कैलेण्डर में इन्हें नौवें से बारहवें महीने का स्थान मिला है।

इस तरह कैलेण्डर महीनों के नाम यह दर्शाते हैं कि कैलेण्डर कहानी केवल तारीखों का क्रम मात्र नहीं बल्कि सभ्यता, संस्कृति एवं इतिहास का साक्षात दर्शन हैं।

कुछ पुराना-कुछ नया

हर नया उत्तम नहीं,
हर पुराना त्यागने योग्य
नहीं,
शाश्वत परिवर्तन की बयार में,
कुछ पुराना-कुछ नया,
कुछ नए से नया,
लेकर हम सब साथ - साथ आगे बढ़े,
समर्पित करे नई और नई पीढ़ी को
मां के स्वर्ण रत्न से वचनों को;
पिता के अनुभवी निर्देशों को,
संभालते चले सांस्कृतिक मूल्यों को,
प्राचीन सहेजे,सेहत सहेजे,
नया सीखे, नवीनतम खोजे,
मार्ग हो प्रशस्त हमारा,
ऐसा उजाला साथ ले,
कुछ पुराना-कुछ नया

- **सुनंदा चतुर्वेदी,** कोलकाता

आत्मगमन

लोग कहते हैं जो दुनिया से चले गये
वो फिर क्या कभी मिल पाते हैं
वो तो बस यादों में सिमट कर रह जाते हैं
पर नहीं, शायद हम ही उन्हें पहचान नहीं पाते हैं
कभी कोई अपरिचित इतना अपना सा लगता है
कहते है, वही तो पूर्व जन्म का कोई अपना है
संसार से जाने के बाद
यही आत्मा, जो अजर अमर है
फिर नये शरीर को धारण करती है
और ना जाने कौन कब किस रूप में मिल जाता है
यही तो जन्म जन्मांतरों का नाता है
यही प्रभु का अमिट वरदान है
हर प्राणी में आत्मा का वास है
भगवान किस किस रूप में हमें हमारे बिछुड़ों से मिलाते हैं
और जो चले गये थे
वो हमें फिर से मिल जाते हैं
पर शायद हम ही उन्हें पहचान नहीं पाते हैं

- **श्रीमती करूणा मिश्रा, मथुरा**

सार्वजनिक विनम्र अपील*
20.01.2026

सम्मानीय बन्धुवर/बहिन जी

सादर पालागन

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु 24000/– वार्षिक (रु. 2000/ – प्रति माह के अनुसार) से विगत कई वर्षों से श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए, बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति सहायता अपने ही समाज के 44 परिवारों के मध्य प्रदान की जा रही है।

वर्तमान में यह सहायता राशि त्रैमासिक अप्रैल, जुलाई,अक्टूबर तथा जनवरी के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है। वित्तीय वर्ष 2025–26 की प्रथम किश्त 31 मार्च 2025 (अप्रैल 25) व द्वितीय किश्त (जुलाई 25) में पूर्व में लाभार्थियों के खाते में प्रेषित की जा चुकी है। सहयोग राशि Rs. 2,56,200/– लाभार्थियों के – बैंक खातों में सीधे भेजी जाती है। सहयोग देने वाले बांधवों के नाम तथा उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि :–

31. श्री मनोज चतुर्वेदी (सागर) द्वारा – 2100/–

32. श्री माथुर चतुर्वेदी सभा गुरुग्राम द्वारा – 6000/–

33. स्व.श्री केदार नाथ जी (पूर्व सभापति,महासभा) की स्मृति में उनके परिवार द्वारा 1,00,000 34. श्री स्वयंभू जी,बैंगलोर द्वारा – 12000

35. स्व. ओंकार नाथ चतुर्वेदी, कानपुर की स्मृति में श्री विकास जी द्वारा – 1,00,000/– द्वारा

36.श्री अविनाश जी,कानपुर द्वारा 12000/–

37. श्री भुवन कुमार जी,गुरुग्राम द्वारा 36000/–38. श्री संजय मिश्रा जी, नोयडा – 1100/–

39. Col. गौरव जी,लखनऊ 10200/–

40. श्री शेखर जी,इंदौर 5000/–

41. श्री अनुराग जी,गुरुग्राम 5000/–

42. श्री कृष्णकांत जी,लखनऊ 12000/–

43. गुप्त सहयोग – 2500/–

44. डॉ. मनोज जी,ग्वालियर 12000

45.श्री सुदेश जी,जयपुर 1100/–

46. श्री रचित जी,झाँसी 12000/–

47. श्री रुचिर जी,झाँसी 12000/–

48. श्री मनोज जी,सागर 3000/–

49. स्व. श्री दयाशंकर जी (कानपुर/होलीपुरा) की चतुर्थ पुण्य तिथि (17/10/25) पर उनके पुत्रों राजीव एवं संजीव रु. 24,000/–

50. श्री प्रवेश जी, चाम्पा 1100/–

51. श्रीमती मंजुल जी, फरीदाबाद 1000/–

52. गुप्तदान 5000/–

53. श्री प्रवीण जी,लखनऊ 5000/–

54. श्री जयंत जी,लखनऊ 12000/–

55. स्व. श्री सत्य देव जी की पुण्य तिथि (24 दिसम्बर) पर उनकी पत्नि श्रीमती करुणा जी (अनूप शहर/ कोलकाता) द्वारा – 5100

56. श्रीमती गौरी जी, नोएडा 24000/–

57. राहुल चौबे जी,हरदा 2100/–

58. विष्णु कांत जी,नोएडा 12000

59. अभय कुमार जी एटा की द्वितीय पुण्य तिथि के अवसर पर 5100/–

60. स्व.प्रह्लाद नारायण जी स्मृति में श्री मनोज जी, सागर द्वारा 2000/–

61. श्री अखिल जी 2100/–

62. श्रीमती इंदु जी,नोएडा 3100/–

63. श्री विनय जी,अहमदाबाद 5000/–

64. श्री रजनीकांत जी,हावड़ा 5000/–

65. श्रीमती बीना जी,हैदराबाद 2100/–

66 . श्री मनोज जी,सागर 2000/–

कुल प्राप्त सहयोग राशि योग : Rs.13,81,501/–

इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए सादर आग्रह है। सभी से बांधव तथा बहनों से करबद्ध निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में खुले हृदय से सहयोग देने की कृपा करें।

सहयोग राशि भेजने के लिए :–महासभा खाता विवरणः

Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
Branch- Anand vihar delhi

राशि स्थानातंरण के बाद उस राशि की सूचना निम्न नंबर पर अपने दूरभाष तथा email के साथ भेजने की कृपा करें ।

निवेदक : शशांक चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
9826086879

शाखा समाचार

मुंबई

अखिल भारतीय माथुर चतुर्वेदी महासभा-कार्यकारिणी बैठक

दिनांक 11 जनवरी 2026 को विले पार्ले स्थित इंटरनेशनल होटल, मुंबई में अखिल भारतीय माथुर चतुर्वेदी महासभा की कार्यकारिणी बैठक का भव्य, गरिमामय एवं अत्यंत सफल आयोजन संपन्न हुआ। यह आयोजन अपने सुव्यवस्थित संचालन, उत्कृष्ट आतिथ्य एवं सकारात्मक ऊर्जा के कारण सभी प्रतिभागियों के लिए स्मरणीय बन गया। कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत 10 जनवरी की संध्या को हाई-टी एवं अल्पाहार के साथ हुई। इसके पश्चात प्रतिभागियों के लिए बस द्वारा जुहू बीच तथा इस्कॉन मंदिर जैसे प्रमुख दर्शनीय स्थलों का भ्रमण कराया गया। यह यात्रा श्री विनोद जी के निवास पर संपन्न हुई। जहाँ उनकी सुपुत्री सुश्री आश्री द्वारा अत्यंत सुरुचिपूर्ण, स्वादिष्ट भोजन की आत्मीय व्यवस्था की गई। जिसने सभी अतिथियों का मन मोह लिया।

अध्यक्षा श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी के मार्गदर्शन में कार्यकारिणी बैठक आरंभ हुई। जिसमें अनेक प्रबुद्धजनों में संरक्षक श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, श्री भरत चतुर्वेदी तथा डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी ने अपने ओजस्वी, दूरदर्शी एवं समाजहित कारी विचार प्रस्तुत किए। विभिन्न योजनाओं पर विचार विमर्श हुआ।

इस अवसर पर महासभा द्वारा मुंबई समुदाय के विशिष्ट व्यक्तित्वों श्री राजेंद्र आर. जी, श्री पुरुषोत्तम जी, श्री अंबुज जी, श्री सुशील जी, श्री राजेश जी, श्री योगेश जी, श्री विवेक जी एवं श्री ईश्वर जी का सम्मान किया गया। इस सफल आयोजन को साकार रूप देने में जिन व्यक्तित्वों का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा, उनमें श्रीमती निमिषा जी, डॉ. रचना जी, श्री पंकज जी, श्री अंबुज जी, श्री पीयूष जी, श्री सुमित जी, श्री अभय जी, श्री विनय जी, श्री कैलाश जी, श्री रितेश जी, श्री महेंद्र जी एवं सुश्री आश्री का नाम आदरपूर्वक उल्लेखनीय है। इनके अथक परिश्रम, समर्पण एवं व्यवस्थागत दक्षता ने इस आयोजन को अभूतपूर्व ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

- मधुपम चतुर्वेदी,सचिव

***

प्रयागराज

समाज के सभी बंधुओ को हर्ष के साथ सादर अवगत कराना है कि दिनांक 16 -11- 2025 को श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा प्रयागराज की बैठक श्री राजेंद्र प्रसाद चतुर्वेदी अन्नी भाई साहब के निवास स्थल 118 बलरामपुर हाउस में आयोजित की गई जिसमें समाज के 30 से अधिक गणमान्य बंधुओ ने बहुत उत्साह से अपनी उपस्थिति दी।

बैठक में विचार विमर्श कर सर्वसम्मति से श्री राजेंद्र प्रसाद चतुर्वेदी अन्नी भाई साहब को अध्यक्ष पद हेतु एवं श्री प्रदीप चतुर्वेदी लूकरगंज को मंत्री पद हेतु चुना गया साथ ही सभा ने अध्यक्ष जी को नयी कार्यकारिणी गठन हेतु अधिकृत भी किया गया। सर्वसम्मति से यह भी निर्णय लिया गया कि संस्था का वार्षिक शुल्क 500 रखा जाए और पूर्व अध्यक्ष और मंत्री से नयी कार्यकारिणी के लिए आय व्यय का पूर्ण विवरण उपलब्ध कराने हेतु अनुरोध किया जाए ।

तट क्रम में अध्यक्ष जी द्वारा दिनांक 23 11.2025 को श्री अनिल चतुर्वेदी जी लोटस अपार्टमेंट के निवास पर बैठक हुयी जिसमें विचार विमर्श के बाद नयी कार्यकारिणी का गठन किया गया । जिसका विवरण निम्न है

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा प्रयाग

कार्य कारणी वर्ष २०२५-२६ एवं २०२६-२७

संरक्षक - जस्टिस राहुल जी, श्री विमल जी, डा० अभिलाषा जी

परामर्शदाता - श्री अनिल जी(लोटस), श्री मनोज जी (लूकरगंज), श्री अजय जी(मम्फोर्डगंज), दिलीप जी (बाई का बाग)

अध्यक्ष - श्री राजेन्द्र प्रसाद (अन्नी जी)

उपाध्यक्ष - डा० मीना जी, श्रीमती गीता जी

सचिव - प्रदीप जी (लूकरगंज)

संयुक्त सचिव - श्री अजय जी, श्री सुजीत कुमार (झबू जी)

सांस्कृतिक सचिव - श्रीमती निहारिका जी, श्रीमती आरती जी

महिला प्रकोष्ठ - श्रीमती सुजाता जी

कोषाध्यक्ष - श्री निशीथ जी (बाई का बाग)

मीडिया प्रभारी एवं कम्प्यूटर - श्री लव (लूकरगंज)

कार्य कारणी सदस्यगण - श्री मलय जी, श्री वैभव जी (प्रीतम नगर), श्री अनुभव (कीटगंज), श्रीमती तृप्ति (सोनी), श्रीमती निशा जी, श्रीमती क्षमा जी, श्रीमती नीलम जी (लूकरगंज), अखिलेश जी (झूंसी), श्री अनूप जी (गोबिंदपुर कालोनी), श्री मधुकर पाठक

***

लखनऊ

रविवार 28 दिसम्बर 2025 को लखनऊ में घने बादलों का कोहरा, सनसनाती हवाओं के बीच मंडल की बहुप्रतीक्षित पिकनिक एवं आमसभा का आयोजन किया गया। विपरीत मौसम के बावजूद लगभग चार सौ स्त्री, पुरुष सहित बच्चों की उपस्थिति से दिलकुशा गार्डन में कभी कभी गर्मी का भी अहसास हो रहा था। सर्व प्रथम नाश्ते के दरम्यान बसंत जी, नवीन जी, प्रदीप जी, राजीव जी मोतीनगर, पियूष जी,नवीन जी जहांगीर पुर, विनय जी, हर्ष जी जेल रोड, एवं सभी बांधव अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में व्यस्त थे, सभी कचौड़ियां एवं जलेबियां चटकारे लेकर खा रहे थे।

इसके बाद बबिता जी, तनुजा जी, शालिनी जी, वर्षा जी आदि महिलाओं और बच्चों की प्रतियोगिताएं आयोजित करवा रहीं थी। कुछ लोग प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन कर रहे थे तो अन्य लोग अमरुद मूंगफली का आंनद लेते हुए चर्चा में व्यस्त थे। प्रतियोगिताओ के बाद सर्वप्रिय एवं मनपसंद हाउजी का संचालन दिलीप सिकंदरपुरिया के साथ उदिता जी,वीता जी कर रही थी।

फिर सभी खाने की ओर पहुंचे, जहां व्यवस्था में राजीव वकील,स्वर्णेश जी,राजीव जी मोतीनगर, सुबोध जी, बसंत जी, नवीन जी विकासनगर,आदि लोग मनोयोग से लगे थे। भोजन के उपरांत लखनऊ मंडल की आमसभा प्रदीप जी (मुन्ना भाई) की अध्यक्षता में सुबोध जी के मंगलाचरण के साथ प्रारंभ हुई। अध्यक्ष की अनुमति से मंत्री सौरभ जी ने नई कार्यकारिणी के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की घोषणा की,जिसकी सदन ने पुष्टि कर दी। इसके बाद मंडल की कार्यवाही संविधान सम्मत चले पर विस्तृत चर्चा हुई, जिसमें यदुवेश जी कृष्णानगर, यदुवेश जी एलडीए, नवीन जी जहांगीरपुर के साथ बसंत जी, पंकज जी आरटीओ,विपिन जी,पंकज जी मोतीनगर, राजीव वकील ने अपने अपने विचार रखे। फिर नवीन जी विकासनगर ने वर्षों से उनके घर पर रखे मंडल के बर्तनों ले कर बताया कि कुछ जगहों से बर्तनों की मांग हुई है,इस पर सदन ने अध्यक्ष प्रदीप जी और मंत्री सौरभ जी को यथोचित कार्यवाही करने का अधिकार दिया।

सदन ने करतल ध्वनि के साथ बाहर से पधारे बांधवों का स्वागत किया। इसके बाद मंत्री सौरभ जी ने बताया कि महिलाओं की तरफ से मंडल में महिला प्रकोष्ठ के गठन करने की मांग हुई है।

अंत में अध्यक्ष प्रदीप जी ने अपने संबोधन में पुरस्कार प्रायोजित करने के लिए पंकज जी(RTO) एवं नवीन जी को धन्यवाद देते हुए सुंदर स्थान उपलब्ध कराने हेतु शिशिर जी एवं पुत्तन जी का आभार व्यक्त किया। अध्यक्ष जी ने सभी आगंतुकों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि लखनऊ चतुर्वेदी समाज से उनकी टीम को जो सहयोग एवं समर्थन मिला है। उसका आभार शब्दों से परे है। इसके बाद अध्यक्ष प्रदीप जी ने शिशिर जी को मंच पर आमंत्रित करते हुए सभी बांधवों से उ प्र बार काउंसिल के आगामी चुनाव में अपने अपने परिचित वकीलों से प्रथम वरीयता का मत दिलवाने का आग्रह करने की अपील की। सभी बांधवों ने करतल ध्वनि के साथ नई कार्यकारिणी को बधाई देते हुए हरसंभव सहयोग एवं समर्थन देने का विश्वास दिलाया।

– सौरभ चतुर्वेदी, मंत्री

***

गुरुग्राम

श्री माथुर चतुर्वेदी गुरुग्राम सभा की बैठक दिनाँक 11-01-26 को श्री नीलकान्त जी के आवास पर सायः 7 बजे सौहार्दपूर्ण बातावरण में वैठक सम्पन्न हुई जिसमें निम्न विषयों पर चर्चा हुई।

1. आगामी होली मिलन को सफल बनाने के लिए सुझाव और कार्यक्रम की रुपरेखा पर विस्तृत चर्चा के बाद सर्व सम्मति से पारित किया गया कि आगामी होली मिलन 2026 दिनांक 15 मार्च 2026 (रविवार) को सभी के पसंदीदा स्थान कम्यूनिटी सेंटर, सेक्टर -15, पार्ट –II , अहमद हॉस्पिटल के पीछे होना निश्चित किया गया। जिसमे होने वाले गतिविधि पर चर्चा की गयी।
2. सर्व सम्मति से आगामी होली मिलन 2026 पर दोपहर के लिए भोजन का मेनू के लिए श्री मनोज जी को मनोनीत किया गया।
3. बैठक में सर्वश्री नीलकांत जी, अनुराग जी, मनोज जी, शरद जी, अभय राज जी, श्रीमती ऋचा जी, श्रीमती राखी जी, श्रीमती नीतिका जी आदि अपस्थित रहे।
4. अभय राज जी ने आगन्तुक सभी सदस्यों का वैठक में उपस्थित होने के साथ साथ सुंदर स्वल्प आहार के लिए श्री नीलकांत जी को धन्यवाद दिया।
5. आगामी दिनांक 15 मार्च 2026 (रविवार) के सफल और स्मरणीय आयोजन की। आगामी वैठक तक इस वैठक को विराम दिया गया।

– अभय राज चतुर्वेदी

समाज समाचार

■ **लक्ष्मी निवास चतुर्वेदी** : समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री लक्ष्मी निवास चतुर्वेदी सागर (म०प्र०) में प्रतिष्ठित मीनाक्षी मेंटल इंडस्ट्रीज एल एल पी,सिद्धगुवान औद्योगिक क्षेत्र में एक पार्टनर के रूप मे कार्यरत रहते हुए अपनी दूरदर्शिता, परिश्रम एवं ईमानदारी से औद्योगिक सफलता के नये मापदंड स्थापित किए हैं, इसके लिए म०प्र० सरकार ने आपको सम्मानित किया है। लक्ष्मी निवास जी चतुर्वेदी समाज के प्रतिष्ठित चार्टर्ड अकाउंटेंट स्व विद्यासागर जी (पुरा/कोलकाता) के पुत्र हैं। तीन भाई बहनों के साथ परिवार में माता पिता से उन्होंने परिश्रम, अनुशासन एवं रिश्तों की कद्र करना सीखा। सम्पन्न परिवार में पालन होने के बाबजूद पिताजी ने सफलता का कोई शार्टकट नहीं होता समझाने तथा आत्म निर्भर बनाने के लिए लक्ष्मी जी को उद्योग एवं व्यवसाय हेतु झांसी भेज दिया, जहां उन्होंने पारिवारिक व्यवसाय संभालने के साथ ही जीवन की समस्यायों एवं चुनौतियों का सामना करना सीखा। लक्ष्मी जी की शादी आगरा के प्रतिष्ठित परिवार की अंजना जी से हुई, दोनों ने मिलकर एक सुसंस्कृत सशक्त परिवार के साथ ही सफल व्यवसाय को भी बढ़ाया। आपके पुत्र आदित्य एवं पुत्री निमिषा भी अपने अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों निभाते हुए सफल व्यावासिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि लक्ष्मी निवास जी को जीवन में हमेशा सफलता ही हासिल होती रही, सन 2004 में पारिवारिक उद्योग को भारी नुक़सान उठाना पड़ा और व्यवसाय को बंद करने का कठोर निर्णय लेना पड़ा,उस दौरान उन्होंने भारत के कई शहरों के बाद नाइजीरिया जाना पड़ा, वहां सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए अपनी दूरदर्शिता परिश्रम और लगन से पुनः सफलता प्राप्त की। आप सेंट्रल इंडिया चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री में सात वर्षों तक जनरल सेक्रेटरी रहे, जहां उन्होंने व्यापारियों एवं उद्योगपतियों के बीच सहयोग एवं विकास की कई योजनाओं को क्रियान्वित किया।लक्ष्मी जी सफल उद्यमी होने के साथ ही रोटरी क्लब एवं सामाजिक संगठनों के माध्यम से सामाजिक सेवा में भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं।लक्ष्मी निवास जी को उद्यमिता एवं सामाजिक कार्यो को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार एवं कई संगठनों ने आपको सम्मानित किया है।

■ मुकेश चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री शिवदत्त चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती लक्ष्मी देवी (चंद्रपुर/ग्वालियर) आयु 55 वर्ष। अब तक आप सामाजिक सेवा के प्रति समर्पित रहे हैं। आप अब तक 47 बार रक्तदान का पुनीत कार्य कर चुके हैं। समाज में 47 बार रक्तदान करने वाले समाज की बिरली शख्शियत वाले इंसान हैं, जो कि परोपकार की अनूठी मिसाल है। आपने सन् 2004 से ये नेक कार्य प्रारंभ किया, जो कि अनवरत जारी है। ईश्वर इनको ऐसे ही शक्ति और समर्पण भावना प्रदत्त करता रहे जिससे आगे भी सराहनीय कार्य जारी रख सकें। आप नियमित व्यायाम, लंबी दूरी की साइक्लिंग के साथ ईश्वर स्मरण एवं पुस्तकें पढ़ने में रुचि रखते हैं। आप अनुशासित सेवा भाव से युक्त तथा सकारात्मक जीवन मूल्यों में विश्वास रखने वाले व्यक्ति हैं। शाखा सभा की विभिन्न गतिविधियों में भी सपत्नीक अपनी सेवाएं अर्पित करते हैं। बधाई

***

■ स्व. श्री सत्य देव चतुर्वेदी की पुण्य तिथि (24 दिसम्बर) पर उनकी पत्नि श्रीमती करुणा चतुर्वेदी जी (अनूप शहर/कोलकाता) द्वारा – 5100 अन्नपूर्णा योजना (र.क्र.3357)

***

■ सौ. प्रज्ञा सुपुत्री श्रीमती सुनीलम एवं श्री अजय चतुर्वेदी (पिनाहट/भोपाल) का शुभ विवाह चि. निमिष सुपुत्र श्रीमती शिखा एवं श्री नीरज चतुर्वेदी (इटावा/गाजियाबाद) के साथ 25 नवंबर 2025 को भोपाल में संपन्न हुआ। इस अवसर पर अजय जी ने महासभा अन्नपूर्णा सहायता 1100/– प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.–3358)

***

■ श्री राहुल चौबे (होलीपुरा/हरदा) द्वारा अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री रविकांत चौबे जी की पुण्य स्मृति में 25 दिसंबर से 31 दिसंबर तक भागवत कथा का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर राहुल चौबे द्वारा अन्नपूर्णा कोष में 2101/– रुपये प्रदान किए।(र.क्र.–3360)

***

■ सूर्यांश चतुर्वेदी ने आगरा यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित यूनिवर्सिटी कार्यक्रम में वेस्टर्न सोलो एवं वेस्टर्न ग्रुप कंपटीशन में भाग लेकर क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया।

***

■ श्री नीरव चतुर्वेदी एक समर्पित समाजसेवी हैं, जिनका जीवन मानवता की सेवा को समर्पित है।उनके पिता का अल्प आयु में कैंसर से संघर्ष करते हुए एम्स, नई दिल्ली में उपचार के

दौरान निधन हो गया। इस पीड़ादायक अनुभव ने श्री नीरव के जीवन की दिशा ही बदल दी। अपने पिता के उपचार के दौरान उन्होंने स्वयं दो बार रक्तदान किया। अपने पिता के निधन के उपरांत सेवा भावना के साथ वर्ष 2013 में उन्होंने अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर नव रचना सेवा संस्थान की स्थापना की। जिसका उद्देश्य मानव सेवा, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक उत्थान है। रेड क्रॉस के सहयोग से अनेक रक्तदान शिविर आयोजित कर अब तक 1000 से अधिक यूनिट रक्तदान नव रचना सेवा संस्थान के माध्यम से जरूरतमंदों को उपलब्ध कराया जा चुका है। बधाई

***

■ दिनाँक 04 दिसम्बर को चि. मुदित सुपुत्र अरविन्द चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. श्री रमेशचन्द्र जी (आगरा) का शुभ विवाह सौ. सौम्या चतुर्वेदी सुपुत्री संदीप कुमार चतुर्वेदी (इटावा/ग्वालियर) के साथ ग्वालियर में सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने महासभा सहायतार्थ 1100/- प्रदान किये। हार्दिक बधाई। (र.क्र.-3356)

***

■ सीता देवी रमेश चंद्र स्मृति ट्रस्ट द्वारा महासभा विशेष सहायता कोष में (1,00,000/-) रुपये एक लाख रु. मात्र प्रदान किए। आभार (र.क्र.-3373)

***

■ श्री पराग चतुर्वेदी, मुंबई द्वारा छात्रवृत्ति कोष में 6000/- सहयोग राशि के रूप में प्रदान किए।आभार (र.क्र.-3374)

***

■ श्री सौरभ मिश्रा सुपुत्र स्वर्गीय गिरजा शंकर मिश्रा-स्व. श्रीमती इंदिरा मिश्रा (सिकंदरपुर/भिलाई) को कांग्रेस पार्टी का भिलाई शहर जिला ब्लॉक प्रमुख मनोनित किया गया। बधाई

***

नया साल आया है

- शैलेंद्र कुमार चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

आया है, साल 2026 नया
हाथों में लेकर फिर,
खुशियों का थाल नया।
नींद से कुहासों की
सूरज फिर भागा है।
तारों की गठरी ले,
गया साल 2025 भागा है।
फैलाया किरणों ने,
रंगों का जाल नया।
भोर के पखेरू फिर,
डाल डाल चहके है।
प्रीति की गुलाबों में,
फिर गुलाब महके है।
ठहरी हुई लहरों में
आ गया उछाल नया।
रंग नए सपनों की,
भरी सुनहरी किरणों की।
मौसम का हाल नया,
फिर से सुर ताल नया।
आया है साल 2026 नया,
उठती नई आशाओं का,
चूमती नई शिखाओं का।
लक्ष्य नए सालों का,
नई सुर ताल का
लाया है नया साल।।

नव वर्ष आगमन और नई आशाएं

-शैलेंद्र चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

नववर्ष आगमन हमारे भीतर नई आशाओं को जन्म देती है। एक नई आशा फुसफुसाती है कि इस वर्ष मैं बदलूंगा मेरा जीवन अलग होगा। हम सच्चाई और ईमानदारी से शांत और प्रसन्न रहने के स्वस्थ बनने के जीवन को अर्थ पूर्ण बनाने के सकंल्प लेते हैं। कुछ हफ्तों तक हमारा सकंल्प मजबूत रहता है फिर ना जाने कैसे जीवन अपनी पुरानी लय में लौट आता है और हमारे किए सकंल्प धीरे धीरे फीके पडने लगते हैं। ऐसा इसलिए नही है कि हमारे पास इच्छा शक्ति नही है, हम कमजोर है ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमें परिस्थितियों के परिवर्तन की प्रतीक्षा होती है। हम अन्य लोगों के बदलने की प्रतीक्षा करते हैं। हम जीवन के आसान होने की प्रतीक्षा करते हैं हमें लगता है कि हम तभी खुश रह पाएंगे। हम प्राय भूल जाते हैं कि हम दुनिया को नहीं बदल सकते। हम लोगों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया अपने विचार शब्द और व्यवहार को बदल सकें तो सब कुछ बदल जाता है। आने वाले नए साल में स्वयं के सोचने समझने की दृष्टिकोण को बदलना होगा समझदारी और करूणा के साथ कार्य करते हुए चुनौती पूर्ण परिस्थितियों में भी भीतर से शांत और स्थिर रह, दायित्वों को प्रसन्नता से निभा सकेंगे तभी दुसरे लोगों के जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदल सकेगा।

बिछड़े स्वजन

* चि.आकाश पुत्र श्री मधुकर नाथ जी (कमतरी/भोपाल) का स्वर्गवास दिनाँक 2 जनवरी 2026 भोपाल में हो गया।
* श्री अनिल चतुर्वेदी जी (इटावा/ प्रयागराज) का देहावसान 76 वर्ष की आयु में दिनाँक 20/ 01/2026 को हो गया।
* श्री सुनील चतुर्वेदी पुत्र स्व. हरकिशोर जी (सिकंदरपुर खास) का स्वर्गवास एक दुर्घटना में अस्पताल में दिनाँक 2 जनवरी 2026 को हो गया।
* श्री प्रभात चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री जुगल किशोर जी बाबू जी (तालगांव/गुड़गांव) का देहान्त लगभग 65 वर्ष की आयु में 08-01-2026 को हो गया।
* श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी पत्नी श्री कमलेश चतुर्वेदी (मथुरा/होलीपुरा/मैनपुरी) का 09- 01- 2026 प्रातः निधन हो गया।
* श्रीमति उमा चतुर्वेदी पत्नी स्व. राधाकिशन चतुर्वेदी (फरौली/पटना) का स्वर्गवास दिनाँक10 जनवरी 26 को हो गया।
* मोहित चतुर्वेदी,मोंटी (हिंडोन/जयपुर) का आकस्मिक निधन लगभग 28 वर्ष की अल्पायु में दिनांक 10 जनवरी 2026 रात्रि को हो गया।
* श्रीमती पूनम चतुर्वेदी पत्नी श्री अनिल चतुर्वेदी (तरसोखर/लिलुआ) का स्वर्गवास प्रातः लगभग 60 वर्ष की उम्र में दिनाँक 10 जनवरी 26 को लिलुआ में हो गया।
* श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी पुत्र श्री योगेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (कायमगंज) का 45 वर्ष की अल्पायु में दिनांक 11 जनवरी 2026 को प्रातः देहावसान हो गया।
* श्रीमती हेमा चतुर्वेदी पत्नी स्व. मिथलेश चतुर्वेदी (मैनपुरी/रिसड़ा) का आज दोपहर में देवलोक गमन हो गया है
* श्री पुष्पेंद्रनाथ चतुर्वेदी,पाजा पुत्र स्व. मुक्ताप्रसाद चतुर्वेदी (चंद्रपुर/ कानपुर/नोएडा) का स्वर्गवास दिनाँक 12 जनवरी 2026 को बेंगलूर में हो गया।
* श्री दिनेश चन्द्र पाण्डेय,दीनू चाचा जी (होलीपुरा) का ८६ वर्ष की आयु दिनाँक 13 जनवरी 26 को निर्वाण हो गया। उनका पार्थिव शरीर बूंदी पहुंच रहा है।
* दिनाँक 14 जनवरी 26 को ललित जी,पप्पू (होलीपुरा/लखनऊ) का अपने बेटे के पास चंडीगढ़ में हृदयाघात से निधन हो गया।
* स्व. श्री गिरजा शंकर मिश्रा- स्व.इंद्रा मिश्रा (सिकंदरपुर/कछपुरा) के सुपुत्र श्री सौरभ मिश्रा (भिलाई)
* श्रीमती प्रमिला चतुर्वेदी पत्नी स्व. लक्ष्मी नारायण चतुर्वेदी (बिजकौली/ग्वालियर) का निधन दिनाँक 19 जनवरी 2026 ग्वालियर में हो गया।
* श्री संजय चतुर्वेदी, अहमदाबाद द्वारा महासभा विशेष सहायता कोष में रुपये ग्यारह हजार रु. मात्र प्रदान किए। आभार (र.क्र.-3370)
* श्री विनय चतुर्वेदी, अहमदाबाद द्वारा महासभा अन्नपूर्णा सहायता कोष में 5000/- रु. मात्र प्रदान किए। आभार (र.क्र.-3368)
* सुश्री रत्ना "बब्बी" सुपुत्री स्व. उमेश चन्द्र चतुर्वेदी (तरसोखर/हरदोई) का निधन 15 नवंबर 2025 को हरदोई में हो गया।
* श्री वत्सल "गोगू" सुपुत्र स्व संजय चतुर्वेदी (तरसोखर/हरदोई) का निधन 5 दिसंबर 2025 को हरदोई में हो गया।
* श्री पंकज चतुर्वेदी सुपुत्र श्री प्रेम नारायण चतुर्वेदी (बसुआ गोविन्दपुर/आगरा/इंदौर) का स्वर्गवास लंबी बीमारी के पश्चात 67 की आयु में इंदौर में दिनाँक 1 दिसंबर 2025 को हो गया। आप प्रख्यात कवि शैल चतुर्वेदी व प्रदीप चौबे के छोटे भाई थे।
* श्री गोरखनाथ जी (गाजीपुर/बरेली) का स्वर्गवास लगभग 84 वर्ष की आयु में दिनाँक 23 जनवरी2026 की रात्रि में टुंडला में अपनी बेटी जया के पास हो गया।
* श्रीमती मंजू पत्नी स्व० भूपेंद्र नाथ चतुर्वेदी (मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनाँक 24 जनवरी 2026 अपनी पुत्री राखी के पास देहरादून में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

"पूर्वजों की विरासत......इनसे ही
अस्तित्व है, उन्हें शत्-शत् नमन।"
श्रीमद् भागवत कथा
का संगीतमय आयोजन
कलश यात्रा
卐 कथा प्रारंभ 卐
25 दिसम्बर गुरुवार 2025
प्रतिदिन दोप. 12.30 बजे से 4 बजे तक
कथा स्थल : मानपुरा, चौबे
बक्की के पास, हरदा
सुश्री मोनिका दीदी शर्मा
आयोजक : राहुल चौबे एवं समस्त चौबे परिवार, मानपुरा, हरदा
संपर्क : 9977240321, 9977143551

RADHE RADHE

(र.क्र. 3360)

"पालागन"

मुम्बई कार्यकारिणी बैठक

मुम्बई कार्यकारिणी बैठक

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' फरवरी 2026

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak2024.chandrika@gmail.com

वसंत पंचमी

मां सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि,
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।

मां सरस्वती आपके जीवन से अज्ञानता के अंधेरे को दूर करें।

सौ. आभा चतुर्वेदी

डॉ. सतीश चतुर्वेदी

(र.क्र. 3171–9/12)